



देश की आवाज़

कर्नाटक में भाजपा के लिए संजीवनी बन गया बजरंगबली का नाम? बुरी फंसी कांग्रेस

कर्नाटक में भाजपा की रैलियों में इन दिनों बजरंगबली की जयजयकार सुनाई देती है। कारण है कि कांग्रेस ने अपने घोषणापत्र में बजरंग दल को बैन करने का जिफ्ट किया था। भाजपा मुद्दे को शिफ्ट करने में कामयाब हुई।



भाजपा लोगों का ध्यान बजरंगबली पर शिफ्ट करने में कामयाब हो गई। कहा जा सकता है कि भाजपा के कुछ लोग जो असंतोष की वजह से शिफ्ट होना चाहते थे वे फिर से जुड़ गए। इस तरह से बजरंगबली ने मानो भाजपा को संजीवनी बूटी ही लाकर दे दी हो।

यह भी कहा जाता है कि कर्नाटक के अंजनद्री पहलड़ियों में ही हनुमान जी का जन्म हुआ था। हालांकि इसको लेकर कई राज्यों के बीच में विवाद है। फिर भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी रैलियों में बजरंगबली की जय बोलना नहीं छोड़ते हैं। भाजपा के एक नेता ने यहां तक कहा कि कांग्रेस ने जिस दिन बजरंगदल को बैन करने का वादा किया उस दिन मंगलवार था और यह हनुमान जी का दिन था। मुख्यमंत्री बासवराज बोम्मई ने कहा कि हनुमान जी का जन्म किफिंधा नगरी में हुआ था जो कि कर्नाटक में है। इसका जिफ्ट रामायण में किया गया है।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी रैली में कहा कि बजरंगबली का जन्मस्थान कर्नाटक में है। उन्होंने कहा कि श्रीराम का जन्म अयोध्या में हुआ था और बजरंगबली का कर्नाटक में। उन्होंने कहा कि बजरंगदल लोगों के सेवा के लिए बनाया गया था और इसमें हनुमान जी के भक्त होते हैं। बता दें कि भाजपा इस मुद्दे को एक अवसर के रूप में देख रही है। कर्नाटक की भाजपा सरकार पहले से ही अंजनधारी पहलड़ियों को विकसित करके पर्यटन स्थल बनाने में जुटी हुई है। पिछले साल के बजट में इसके लिए 100 करोड़ रुपये आवंटित किए गए थे।

सम्पादकीय

पंजाब में भाजपा की भविष्य की रणनीति

पंजाब में भाजपा उद्वेग की स्थिति में है। अकाली दल से समझौते से पूर्व जनसंघ/भारतीय जनता पार्टी पंजाब में 0 से लेकर 9 विधानसभा सीटों तक सिमटी हुई थी। आपात स्थिति के उपरान्त 1977 में हुए चुनावों में भी जब जनता पार्टी और अकाली दल ने मिल कर चुनाव लड़ा था तो जनता पार्टी ने जनसंघ रूप को विधानसभा में महज 12 सीटें मिली थी। कालान्तर में जब भाजपा और अकाली दल ने आपस में मिल कर चुनाव लड़ने का मन बना लिया तो भाजपा को 12 से 18 के बीच सीटें मिलने लगी थीं। इसमें कोई शक नहीं कि यह राजनीतिक सुविधा का समझौता था। भाजपा ने मान लिया था कि वह पंजाब में हिन्दुओं के एक तबके की पार्टी है और अकाली दल ने मान लिया था कि वह मोटे तौर पर पंजाब के जट्ट/सिख की पार्टी है। दोनों पार्टियों के लिए जरूरी था कि वे अपने प्रभाव क्षेत्र को बढ़ा कर पूरे पंजाबियों की पार्टी बनने की कोशिश करतीं। अन्यथा उनकी स्थिति पंजाब की राजनीति में दबाव सहूह से आगे नहीं बढ़ पाएगी।



दिनेश शर्मा

अकाली दल का प्रभाव क्षेत्र यकीनन भाजपा से ज्यादा था, लेकिन वह समस्त पंजाबियों की पार्टी न होकर जाटों के एक हिस्से और कुछ सीमा तक खत्री सिखों के एक हिस्से की पार्टी मात्र ही थी। लेकिन भारतीय जनता पार्टी का प्रभाव क्षेत्र अकाली दल से भी कम था। इस स्थिति में दोनों पार्टियों के पास सत्ता के सिंहासन तक पहुंचने का एक ही रास्ता था, या तो अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ा कर समस्त पंजाबियों की पार्टी बनती या फिर सत्ता तक पहुंचने का कोई बाईपास ही तलाशतीं। दोनों पार्टियों ने दूसरे रास्ते को ही सरल व प्रभावकारी समझा। उन्होंने आपस में समझौता कर लिया और सत्ता पर कब्जा कर लिया। यकीनन इस राजनीतिक प्रयोग में भाजपा की हैसियत 'छोटे भाई' की ही होती। यह प्रयोग दो-तीन दशक तक चला। लेकिन इस प्रयोग में दोनों पक्ष ही असन्तुष्ट दिखाई देने लगे। भाजपा के कार्यकर्ताओं को यह लगने लगा था कि अकाली दल से समझौते के कारण पार्टी का विस्तार रुक गया है, जबकि यह सोच यथार्थ पर आधारित नहीं थी। समझौते से पूर्व के तीन दशकों में भी पार्टी पूरे पंजाब, खासकर राज्य का हृदय कहे जाने वाले मालवा क्षेत्र में तो अपना प्रभाव कहीं भी बना नहीं सकी थी। अकाली दल को यह भ्रम होने लगा था कि अब पंजाब के अन्य समुदायों में भी उसने अपना संगठन खड़ा कर लिया है और अपने बलबूते वह पंजाब में अपनी सरकार बना सकता है। इसलिए किसान आन्दोलन के बहाने उसने भाजपा से अपना पुराना गठबन्धन तोड़ लिया। लेकिन इससे दोनों पक्ष ही प्रसन्न दिखाई दे रहे थे। अकाली दल को लगता था उसकी पीट से बोल उतर गया और भाजपा को लगा कि उसके विकास के रास्ते को दीवार हट गई। सचमुच इसका क्या परिणाम हुआ, यह 2022 के विधानसभा चुनावों से पता चल जा रहा भारतीय जनता पार्टी को दो और अकाली दल को महज तीन सीटों पर ही संतोष करना पड़ा।

अगले साल गणतंत्र दिवस परेड में केवल महिलाएं होंगी शामिल: रक्षा मंत्रालय

नई दिल्ली। विभिन्न सेक्टरों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए सरकार ने तय किया है कि कर्तव्य पथ पर होने वाले गणतंत्र दिवस परेड में मार्च पास्ट, झांकियां और परफॉर्मेंस में सिर्फ महिलाएं शामिल होंगी। रक्षा मंत्रालय ने इस संबंध में सैन्य बलों तथा परेड में शामिल होने वाले अन्य सरकारी विभागों को पत्र लिखा है। इसमें कहा गया है कि मार्च पास्ट करने वाले दस्ते और उनके साथ जुड़े बैंड तथा झांकियों में सिर्फ महिला प्रतिभागी होंगी। इस पत्र ने कई वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों को आश्चर्य में डाल दिया है और भ्रम की स्थिति पैदा की है। कई लोगों का मानना है कि इसके लिए सेना में पर्याप्त महिलाएं उपलब्ध नहीं हैं। वर्तमान स्थिति यह है कि मार्च करने वाली कुछ टुकड़ियों में केवल पुरुष होते हैं। गौरतलब है कि सशस्त्र बलों ने लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए महिलाओं को कमान की भूमिका सौंपने, भविष्य की नेतृत्वकारी भूमिकाओं के लिए तैयार करने और आर्टिलरी रेजिमेंट में शामिल करने जैसे कई उपाय किए हैं। जानकारी के मुताबिक, परेड में

महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करने का फैसला 7 फरवरी को हुई एक बैठक के दौरान लिया गया था। रक्षा सचिव गिरिश्वर अरमाने की अध्यक्षता



में हुई बैठक में सेना, नौसेना, वायु सेना, गृह मंत्रालय, आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय के वरिष्ठ प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया था। बैठक के लगभग एक महीने बाद, रक्षा मंत्रालय ने 1 मार्च को भाग लेने वाले बलों, मंत्रालयों और विभागों को औपचारिक रूप से एक पत्र जारी किया।

बागेश्वर बाबा पर बीजेपी की नीतीश सरकार को सलाह, अपने धर्म का अपमान, सेवयुलरिज्म नहीं; अतिथि देवो भवः

पटना। बागेश्वर बाबा के पटना आगमन को लेकर बीजेपी और राजद के बीच तलवारें खींच गई हैं। एक तरफ नीतीश सरकार के मंत्री धीरेन्द्र शास्त्री के दौरे का विरोध कर रहे हैं। तो वहीं दूसरी तरफ बीजेपी बागेश्वर सरकार के समर्थन में खड़ी दिख रही है। नेता प्रतिपक्ष विजय कुमार सिन्हा ने कहा कि बागेश्वरधाम के कथावाचक धीरेन्द्र शास्त्री का सम्मान किया जाना चाहिए। उन्होंने नीतीश सरकार को हिदायत देते हुए कहा कि धर्मनिरपेक्षता का मतलब अपने धर्म का अपमान करना नहीं होता। बिहार में तो अतिथि को देवता के रूप में पूजा जाता है।



बागेश्वर बाबा के पटना आगमन को लेकर नेता प्रतिपक्ष विजय सिन्हा ने कहा कि धीरेन्द्र शास्त्री का सम्मान होना चाहिए, नीतीश सरकार को सलाह देते हुए कहा कि अपने धर्म का अपमान, धर्मनिरपेक्षता नहीं होती।

देवता के रूप में पूजा जाता है। ऐसे में सत्तापक्ष एवं विपक्ष को बिहार की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए पंडित धीरेन्द्र शास्त्री के कार्यक्रम में सकारात्मक सहयोग करना चाहिए। कथावाचक धीरेन्द्र शास्त्री का सम्मान होना चाहिए। शनिवार को जारी बयान में नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि धर्मनिरपेक्षता का यह मतलब नहीं है कि अपने धर्म का अपमान करें।

बागेश्वर बाबा पर सियासी घमासान

इससे पहले बीजेपी के तमाम नेताओं ने नीतीश सरकार को चुनौती देते हुए कहा था कि अगर हिम्मत है तो बागेश्वर धाम को पटना आने से रोककर दिखाएं और एयरपोर्ट पर उनकी गिरफ्तारी करें। वहीं नीतीश सरकार के मंत्री सुरेंद्र यादव ने बीजेपी की चुनौती की स्वीकारते हुए बागेश्वर बाबा को रोकने का दावा किया है।

जालौन में सड़क हादसा, पांच मरे 17 घायल

जालौन। उत्तर प्रदेश में जालौन जिले के माधवगढ़ क्षेत्र में रविवार भोर एक बस के गहरे गड्ढे में गिरने से उसमें सवार पांच यात्रियों की मृत्यु हो गयी जबकि 17 अन्य गंभीर रूप से घायल हो गये। पुलिस अधीक्षक ईरज राजा ने बताया शनिवार रात रेडर क्षेत्र मंडेला गांव से एक बारात रामपुरा थाना क्षेत्र के दुतावली गांव आई थी। बारात को लेकर बस वापस मंडेला जा रही थी कि भोर करीब तीन बजे माधवगढ़ क्षेत्र के गांव गोपालपुरा के पास किसी अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी जिससे बस गहरे गड्ढे में गिर गई।



सैन्टर रेफर किया गया है। मृतकों में रघुनंदन (48), कुलदीप सिंह (38), शिरोमन (65) जालौन के निवासी थे जबकि बस चालक कलू और परिचालक विकास राजावत मध्य प्रदेश के भिंड जिले के रहने वाले थे। हादसे में घायलों की पहचान वृजेंद्र, अशोक, लालता प्रसाद, वीर सिंह, शिव शंकर, सुंदर, कलू, शिव सिंह, महिपाल, लखू, राजेंद्र, रविंद्र के तौर पर की गयी है।

आजम खान को एक और झटका, करीबी रहे रिटायर्ड सीओ आले हसन गिरफ्तार; कोर्ट से जारी हुआ था गैर जमानती वारंट

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता और पूर्व मंत्री आजम खान को एक और झटका लगा है। पुलिस ने उनके करीबी रहे रिटायर्ड सीओ आले हसन को गिरफ्तार कर लिया है। आले हसन के खिलाफ कोर्ट ने शत्रु संपत्ति मामले में गैर जमानती वारंट जारी किया था। आले हसन, आजम खान के साथ कई गंभीर मामलों में आरोपी हैं। आरोप है कि वह कई मामलों में हाजिर नहीं हो रहे थे। लिहाजा, वारंट तामील करते हुए पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। इसके पहले 2020 में भी आले हसन की गिरफ्तारी हुई थी। रामपुर की सिविल लाइंस पुलिस ने उन्हें कोर्ट जाते वक्त रास्ते से गिरफ्तार किया था। आले हसन को किसी समय में आजम खान का दाहिना हाथ बताया जाता था। वह जौहर विश्वविद्यालय



के सिक्वोरिटी ऑफिसर रहे। बताया जाता है कि जब यूपी में समाजवादी पार्टी की सरकार थी तो रामपुर में आजम खान के साथ आले हसन की भी तृती बोलती थी। रामपुर पुलिस में सीओ के अलावा आले

आजम खान ने उन्हें जौहर विश्वविद्यालय का सिक्वोरिटी ऑफिसर बना दिया था। आले हसन, वक्फ की जमीन कब्जाने के मामले में भी आरोपी हैं।

भड़काऊ भाषण मामले में आजम होगी सुनवाई

उधर, आजम खां के भड़काऊ भाषण के मामले में सुनवाई नहीं हो सकी। अब इस मामले की सुनवाई आठ मई को होगी। शहजादनगर थाने में दर्ज भड़काऊ भाषण के मामले में सपा नेता के 313 के तहत बयान हो चुके हैं। उनकी ओर से साफ सफाई के लिए साक्ष्य प्रस्तुत किए जा रहे हैं। सोमवार को भी सुबूत पेश किए जाने थे। लेकिन इस मामले की सुनवाई नहीं हो सकी। अब इस मामले की सुनवाई आठ मई को होगी।

टिकरी बॉर्डर से जंतर-मंतर के लिए निकला किसानों का जत्था

झज्जर/बहादुरगढ़/सोनीपत। भारतीय कृषी संघ के अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह की गिरफ्तारी की मांग को लेकर दिल्ली में जंतर-मंतर पर धरना दे रहे पहलवानों को दिल्ली पुलिस से हुई झड़प के बाद हर तरफ से समर्थन मिल रहा है। किसानों व खापों के समर्थन की घोषणा के बाद दिल्ली पुलिस अलर्ट पर है। दिल्ली पुलिस ने सिंधु बॉर्डर पर नाका लगा रखा है। वाहनों को जांच के बाद ही दिल्ली में प्रवेश दिया जा रहा है। वहीं कुंडली बॉर्डर पर सोनीपत पुलिस की भी एक कंपनी तैनात कर दी गई है। पुलिस का कहना है



कि सुरक्षा व्यवस्था बेहतर रखने के साथ ही ट्रैफिक को नियंत्रित करने के लिए पुलिस तैनात है। राजधानी दिल्ली के टिकरी बॉर्डर पर एक बार फिर से किसान और दिल्ली पुलिस आमने-सामने हो गए। महिला पहलवानों के समर्थन के लिए जंतर मंतर के लिए निकले किसानों के जत्थे को दिल्ली पुलिस ने टिकरी बॉर्डर पर रोक लिया, लेकिन महिला किसान दिल्ली पुलिस के नाकों तोड़कर पैदल ही आगे बढ़ चलीं। महिला किसानों ने एमसीडी के कमरिशियल टोल प्लाजा पर जाकर धरना प्रदर्शन शुरू कर दिया। सड़क पर जाम लगा

रही है कि उनके साथ यौन शोषण हुआ है। ऐसे में आरोपी को तुरंत गिरफ्तार करना चाहिए और सख्त से सख्त सजा देनी चाहिए। महिलाओं ने कहा कि अगर उन्हें रोका गया तो वही रुक जाएगी। फिलहाल 1 दिन के प्रदर्शन के लिए दिल्ली आई हैं।

जांच की जरूरत नहीं, बेटियों को मिले न्याय-पंजाब के भारतीय किसान यूनियन एकता उग्राह संगठन से जुड़ी हुई सैकड़ों महिलाएं कल ही पंजाब से दिल्ली के लिए रवाना हो गयी थीं।

किसानों को बताएं धान की सीधी बिजाई के फायदे

पानीपत। कृषि विज्ञान केन्द्र उझा में शुक्रवार को एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता एसडीएम वीरेंद्र हुल ने की। शिविर में कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक, कृषि विभाग के कर्मचारी व प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया।

शिविर में किसानों को धान की सीधी बिजाई के फायदे बताए गए एसडीएम वीरेंद्र हुल ने कर्मचारियों को संबोधित करते हुए जल संरक्षण एवं अटल भू-जल योजना के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि जल की एक-एक बूंद कीमती है। हम सबको जल के संरक्षण के बारे में ज्यादा से ज्यादा सोचना ही नहीं बल्कि कारगर तरीके से इस पर काम भी करना चाहिए। दिन प्रतिदिन हो रहे जल दोहन के बारे में भी लोगों को जागरूक करना चाहिए। कृषि विज्ञान के वैज्ञानिक डा० राजबीर गर्ग ने धान की सीधी बिजाई में होने वाली तकनीकी समस्यायें एवं उनके निवारण के बारे में चर्चा की व उन्होने यह भी बताया कि खेत में धान की सीधी बिजाई करने पर मौसम तथा खेती की नमी अनुसार पहली सिचाई 7 से 21 दिन के बाद करें।

उप कृषि निदेशक डा० वजीर सिंह ने बताया कि धान की सीधी बिजाई के लिए किसान फसलडॉटहरियाणाडॉटजीओवीडॉटइन पर अपना पंजीकरण कर सकते हैं, जिसमें किसानों को 4000 रूपये प्रति एकड़ की दर से अनुदान दिया जायेगा व अधिकतम एकड़ की कोई सीमा नहीं है। उप मण्डल कृषि अधिकारी डा० रघु श्याम ने बताया कि धान की सीधी बिजाई के लिए जिलें भर के 30 गांव में 8 मई से 16 मई तक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जायेगा। किसानों से अनुरोध है कि वे कृषि विभाग के कर्मचारियों से सम्पर्क में रहे ताकि विभिन्न योजनाएं की जानकारी समय पर मिल सकें।

ऑनर किलिंग में महिला सहित तीन दोषी करार

हिसार। यहां की अदालत ने ऑनर किलिंग के एक मामले में शुक्रवार को महिला सहित तीन को दोषी करार दिया है। दोषियों को 12 मई को सजा सुनाई जाएगी। दोषियों ने अपनी बहन बबली व जींद के उजाना के गांव सेड़ा माजरा के रहने वाले विक्रम की जहर देकर हत्या कर दी थी। इन दोनों की प्रेम-प्रसंग के शक में जहर देकर हत्या कर शव सिद्धमुख नहर में फेंक दिए गए थे। इनके दाह संस्कार के बाद उनके कपड़े व फोटो से पहचान की गई थी। इस संबंध में आदमपुर पुलिस को दी शिकायत में मृतक विक्रम के भाई दिलबाग ने बताया था उसके छोटा भाई विक्रम को 11 सितंबर 2017 को लगभग चार बजे फोन किया तो फोन रिव्च ऑफ था। उसकी तलाश की लेकिन वह नहीं मिला। लगभग सप्ताह बाद 17 सितंबर 2017 को तलाश करते हुए आदमपुर आया तो उसे पता चला कि उसके भाई विक्रम को आदमपुर के इंद्रा कालोनी के रहने वाले शिवकुमार तथा उसकी मां कलावती ने बुलाया था। इसके बाद वह दोबारा अपने गांव गांव और गांव के मौजिज व्यक्तिों के साथ आदमपुर में शिवकुमार के घर पहुंचा। वहां पहले से ही आजाद, शिवकुमार, शिवकुमार की मां कलावती व उसकी बहन ज्योति व उसका जीजा मौजूद थे। जब उसने अपने भाई विक्रम के बारे में पूछताछ की तो उन्होंने कहा कि उसका भाई विक्रम और उनकी बेटी चले गए हैं। अब इस बात पर मिश्री डाल दो। जब बार-बार विक्रम के बारे में पूछ तो वे बार-बार यहीं कहते रहे कि आप विक्रम को भूल जाओ, जो होना था वो हो गया। उनके द्वारा बार-बार यह कहने पर उसे विश्वास हो गया कि उसके भाई विक्रम को शिवकुमार उर्फ फौजी, कन्हो, उसकी बहन ज्योति, बहनोई व आजाद मिलकर मार दिया है। उसके शव को कहीं छिपा दिया है। शिकायत के बाद बाद आरोपित शिवकुमार से वारदात में प्रयोग किया मोबाइल बरामद किया गया जबकि कलावती से वारदात में प्रयोग गिलास, पोचे का कपड़ा बरामद किया गया। 24 सितंबर 2017 को ड्यूटी मजिस्ट्रेट ललित जाखड़ की मौजूदगी में थाना गोगामेड़ी व थाना भिरानी पुलिस द्वारा मृतक बबली व विक्रम का दाह संस्कार किया गया था।

हरियाणा की मुख्यमंत्री दूध उपहार योजना को मिलेगा स्कॉच गोल्ड अवार्ड

चंडीगढ़। हरियाणा सरकार की महिला एवं बाल विकास विभाग की मुख्यमंत्री दूध उपहार योजना को स्कॉच गोल्ड अवार्ड के लिए चुना गया है। इस योजना के तहत छह माह से छह वर्ष आयु वर्ग के बच्चों, गर्भवती महिलाओं, दूध पिलाने वाली माताओं के पोषण व स्वास्थ्य स्तर में सुधार लाने का प्रयास किया जा रहा है। स्कॉच गोल्ड अवार्ड के लिए चयन होने पर महिला एवं बाल विकास मंत्री कमलेश ढांडा ने मुख्यमंत्री मनोहर लाल के दूरदर्शी विजन और विभाग के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को बधाई दी है। शुक्रवार को चंडीगढ़ में यह जानकारी देते हुए महिला एवं बाल विकास मंत्री ढांडा ने कहा कि प्रदेश



में महिलाओं व बच्चों के प्रति कुपोषण के बढ़ते खतरे को देखते हुए कोरोना काल में 5 अगस्त 2020 को मुख्यमंत्री दूध उपहार योजना शुरू की गई थी। इसके तहत आंगनवाडी केंद्रों पर चिन्हित बच्चों, गर्भवती महिलाओं, दूध पिलाने वाली माताओं में विटामिन ए व डी 3 की कमी को दूर करने के मकसद से रिस्कड दूध को साल में 300 दिन उपलब्ध करवाने का लक्ष्य रखा गया था। ढांडा ने बताया कि प्रदेश में 6 माह से 6 साल तक के 9 लाख 23 हजार बच्चों, 2 लाख 88 हजार गर्भवती महिलाएं व दूध पिलाने वाली माताओं को सप्ताह में छह दिन गुलाब, इलायची, चॉकलेट, वनीला, बटरस्क्रॉच व सादा दूध स्वाद में दूध उपलब्ध करवाया गया है। इस दूध के माध्यम से लाभार्थियों को प्रोटीन, कैल्शियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम, विटामिन बी 12, विटामिन ए व डी3 की प्रचुर मात्रा मिली। जिसके कारण प्रदेश में पोषण के नजरिए से सामान्य श्रेणी के बच्चों की संख्या में 3.67 प्रतिशत बढ़ोतरी हुई है, जबकि माध्यम रूप से कम वजन वाले बच्चों में 3.66 प्रतिशत कमी दर्ज की गई है।

सनसनीखेज व मसालेदार ख़बरों से बचें-एडीसी वैशाली शर्मा

क़रनाल। पंचायत भवन के सभागार में शुक्रवार को

नारद जयंती के उपलक्ष्य में विश्व संवाद केंद्र की तरफ से पत्रकार संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। नारद स्मृति के रूप में आयोजित इस कार्यक्रम में विभिन्न वक्ताओं ने नारद के व्यक्तित्व और कृतिवत् पर प्रकाश डाला। साथ ही हजारों वर्ष पूर्व नारद जी के द्वारा किए गए कार्यों को आज की पत्रकारिता से जोड़ा गया। इस दौरान वर्तमान समय में पत्रकारिता की उपयोगिता के बारे में वक्ताओं ने अपने विचारों को व्यक्त किया। कार्यक्रम में जिते भर से आये सौ से अधिक पत्रकारों को सम्मानित भी किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कुरुक्षेत्र विभाग संघचालक सुधीर कुमार, मुख्य अतिथि करनाल की अतिरिक्त आयुक्त डॉ. वैशाली शर्मा रहीं। समारोह की अध्यक्षता एन्नो इंडिया के राष्ट्रिय एचआर हेड यशपाल केहरवाल ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में इन्फू के क्षेत्रीय प्रभारी निदेशक डॉ धर्मपल सिरोही, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी के पूर्व वॉइस चेयरमैन वीरेंद्र चौहान, समाजसेवी अनूप भरद्वाज, अंतर्राष्ट्रीय खिलाडी मधू कुमारी तथा एशियाड खेलों के कोच जयवंत सिंह विशेष तौर पर मौजूद रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि व अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलित करके किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. वैशाली शर्मा ने कहा कि नारद जी लोक मंगल की भावना व कामना के साथ तीनों लोकों में भ्रमण कर उनका हाल समाचार लेकर सूचनाओं का आदान-प्रदान करते थे। उस समय

मानसून से पहले शहर के सभी छोटे-बड़े नालों की सफाई के लिए नगर निगम ने कसी कमर

करनाल। नगर निगम मानसून से पहले शहर के सभी छोटे-बड़े नालों की सफाई करवाएगा। बीते माह इस कार्य का प्लान तैयार किया गया था, अब वर्क ऑर्डर जारी किए जा रहे हैं। अलग-अलग लोकेशन के नालों पर अनुमानित 1 करोड़ 2 लाख रूपये की राशि खर्च की जाएगी। नगर निगम आयुक्त अभिषेक मीणा ने शुक्रवार को यह जानकारी दी।

यह होंगे कार्य- निगमायुक्त ने बताया कि शहर में कई छोटे-बड़े नाले हैं, जो बरसाली पानी की निकासी के चैनल के रूप में कार्य करते हैं। इनमें सबसे अहम मुगल कैनाल है, जो नेशनल हाईवे को क्रॉस करके ड्रेन नम्बर-1 परिवर्तित हो जाती है। नगर निगम की ओर से मुगल कैनाल की हर साल व्यापक स्तर पर सफाई करवाई जाती है, गत वर्ष इसके सकारात्मक परिणाम रहे थे। उन्होंने बताया कि ड्रेन नम्बर-1 की सफाई अगले सप्ताह से शुरू होगी, इसका वर्क ऑर्डर जारी हो गया है और इस कार्य पर अनुमानित 16 लाख 82 हजार रूपये की राशि खर्च होगी। करीब 2 किलोमीटर लम्बी ड्रेन की पोकेलन मशीनों से गहराई तक गाद निकाली जाएगी, जिससे पानी निकासी निर्बाध रूप से होगी। इसके साथ-साथ राम नगर से प्रीतम नगर

तक करीब साढ़े 4 किलोमीटर लम्बे नाले की सफाई का वर्क ऑर्डर भी जारी हो गया है। इसके लिए 18 लाख 53 हजार रूपये का अनुमान तैयार किया गया है।

उन्होंने बताया कि मुगल कैनाल शहर के मेला राम स्कूल से आगे 3 फेज में मौजूद है। पहला फेज ओल्ड सब्जी मंडी तक है, इसकी लम्बाई 1280 मीटर है। दूसरा फेज ओल्ड सब्जी मंडी से मेरठ रोड तक है तथा इसकी लम्बाई 1055 मीटर है। इसी प्रकार तीसरा फेज मेरठ रोड से प्रारम्भ होकर नेशनल हाईवे तक है। इसकी लंबाई 600 मीटर की है। इस वर्ष भी मुगल कैनाल की सफाई मुकम्मल तौर पर करवाई जाएगी। इस

सफीदों में पकड़ा गया ढ़ैचा बीज का अवैध स्टॉक

जाँद। सफीदों में शुक्रवार को ढ़ैचे के बीज का बड़ा अवैध स्टॉक पकड़ा गया है। नगर के हट रोड स्थित सरकारी बीज की दुकान पर कुछ लोग किसानों के लिए सिल्सडी पर आए ढ़ैचे के बीज को ख़रीद कर प्राइवेट कई गुणा महंगे दाम पर बेच रहे थे। किसानों ने नगर के रेलवे रोड स्थित एक मकान में इस स्टॉक व इन्हें ढ़ो रही कई रिक्शा को पकड़ा और मामले की जानकारी पुलिस को दी। सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची। वहीं काफी तादाद में किसान एएसडीएम सत्यवान सिंह मान से मिले और इस मामले की उच्चस्तरीय जांच की मांग की। जिस पर एसडीएम ने जांच के लिए तीन अधिकारियों की टीम का गठन किया। नगर के हट रोड स्थित सरकारी बीज बिक्री केंद्र पर हर रोज किसान बीज लेने के लिए आकर लाइन में लग जाते थे लेकिन यहां पर किसानों को कम और किसानों के नाम पर प्राइवेट लोग बीज के कट्टे अधिक ले जाते हुए दिखाई दिए। सुबह आए किसान साथ को खाली हाथ लौट जाते। इसको लेकर किसानों में भारी रोष व्याप्त था। शुक्रवार को भी किसान बीज लेने के लिए आए हुए थे और वे कई घंटों तक धूप में तपते रहे। किसानों ने देखा कि कुछ रिक्शा ढ़ैचे के बीज की भर कर बिक्री केंद्र से धड़ाधड़ भर निकल रही है और कुछ प्राइवेट लोग बीज बिक्री केंद्र पर कब्जा किए हुए हैं। जैसे ही रिक्शा वहां से भरकर निकली तो किसान उसके पीछे लग

रूफ़ुल खेड़ा जल्द बनेगा हरियाणा का पहला सोलर विलेज:चौटाला

जाँद। उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ने कहा कि गुरुकुल खेड़ा को सोलर विलेज बनाया जाएगा। यहां हर घर, चौपाल, स्कूल व अन्य संस्थाओं को सोलर पैनल युक्त किया जा रहा है। यह प्रदेश का पहला सोलर विलेज होगा। सौर ऊर्जा सिस्टम लगाने के बाद घरों में सोलर के जरिये ही बिजली की सप्लाई होगी और यह गांव बिजली के मामले में आत्म निर्भर बन जाएगा। डिप्टी सीएम शुक्रवार को उजाना हलके के एक दिवसीय दौरे के दौरान गुरुकुल खेड़ा में कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। गुरुकुल खेड़ा है कि गुरुकुल खेड़ा गांव को सोलर विलेज बनाने की घोषणा डिप्टी सीएम ने की थी। योजना स्वरूप गांव के सोलर पैनल लगाने का कार्य जारी है। अब तक गांव में लगभग एक दर्जन से अधिक घरों में सोलर पैनल लगाए जा चुके

हैं। इस गांव को सोलर विलेज बनाने पर करोड़ों रुपये की राशि खर्च की जाएगी। डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला ने कहा कि गांव के दो स्कूलों जिनमें एक सरकारी और एक कन्या गुरुकुल शामिल है, उन पर पांच-पांच किलोवाटर के सोलर पैनल लगाए गए हैं। अब इनका कनेक्शन बिजली मीटर से किया जाना है। इसके अलावा गली, चौराहों व चौपाल में

स्ट्रीट लाइट व हार्ड मास्क लाइट लगाई गई है। इसमें 50 स्ट्रीट लाइट व चार हार्ड मास्क लाइट शामिल हैं। इसके अलावा एक आंगनबाड़ी और पांच चौपाल में भी सोलर पैनल लगाए गए हैं। इन सभी स्ट्रीट लाइट, हार्ड मास्क लाइट का टेस्टिंग का काम जारी है। योजना के तहत अब तक दर्जनों घरों में सोलर पैनल लगाए जा चुके हैं। इनमें एक मकान

है। इस गांव को सोलर विलेज बनाने पर करोड़ों रुपये की राशि खर्च की जाएगी। डिप्टी सीएम दुष्यंत चौटाला ने कहा कि गांव के दो स्कूलों जिनमें एक सरकारी और एक कन्या गुरुकुल शामिल है, उन पर पांच-पांच किलोवाटर के सोलर पैनल लगाए गए हैं। अब इनका कनेक्शन बिजली मीटर से किया जाना है। इसके अलावा गली, चौराहों व चौपाल में

कार्यक्रम अध्यक्ष यशपाल केहरवाल ने अपने संबोधन में कहा कि पूं. जुगुल किशोर शुक्ल द्वारा प्रथम समाचार पत्र उदत्त मातृदं के माध्यम से प्रारंभ किया गया था जो नारद जयंती के दिन ही शुरू किया गया था। नारदजी विष्णु भगवान के परम भक्तों में से एक माने जाते हैं। देवर्षि नारद मुनि विभिन्न लोकों में यात्रा करते थे, जिनमें पृथ्वी, आकाश और पाताल का समावेश होता था। ताकि देवी-देवताओं तक संदेश और सूचना का संचार किया जा सके। कहा जाता है कि नारद मुनि सच्चे सहायक के रूप में हमेशा सच्चे और निर्दोष लोगों की पुकार श्री हरि तक पहुंचाते थे। इन्होंने देवताओं के साथ-साथ असुरों का भी सही मार्गदर्शन किया। यही वजह है कि सभी लोकों में उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। उन्होंने कहा की नारद जी से सभी को संस्कारित पत्रकारिता की प्रेरणा लेनी चाहिए। मुख्य वक्ता राष्ट्रिय स्वयंसेवक संघ कुरुक्षेत्र के विभाग संघ चालक सुधीर कुमार ने कहा की पत्रकारिता तथ्यों को समेटती है, उनका विश्लेषण करती है व उसके बाद उसकी अनुभूति करके दूसरों के लिए अभिव्यक्त होती है। एक और



कार्य का टैण्डर हो चुका है, अगले सप्ताह वर्क ऑर्डर भी जारी हो जाएगा। मुगल कैनाल की साफ-सफाई पर अनुमानित 45 लाख रूपये की राशि खर्च की जानी है।

निगमायुक्त ने बताया कि उपरोक्त के अतिरिक्त शहर में अलग-अलग लोकेशन पर 9 नाले अस्तित्व में हैं। इनमें कुंजपुरा रोड बीकानेर स्वीट्स से सब्जी मंडी पुलिस पोस्ट तक दोना साईड के नाले, मुगल कैनाल से महाराणा प्रताप चौक तक दोना साईड, नालट्टी रोड से बांसो गेट, भगवाडिया गैस एजेंसी से गिराड वाला पार, भगवाडिया गैस एजेंसी से हांसी चौक, हांसी चौक से रामाडिया

चौक, रामगडिया चौक से रेस्ट हाऊस, अस्पताल चौक से महात्मा गांधी चौक तथा बस स्टैण्ड से महर्षि वाल्मिकी चौक तक के नाले शामिल हैं। इन सभी की सफाई करवाई जाएगी। आगामी 8 मई को इन नालों की सफाई का टैण्डर ओपन होगा और फिर वर्क ऑर्डर जारी होगा। इस काम के लिए 22 लाख रूपये का अनुमान तैयार किया गया है। उन्होंने बताया कि नालों की साफ-सफाई का कार्य जून तक निपटा लिया जाएगा।

इसके अतिरिक्त छोटे नालों की सफाई के लिए भी नगर निगम का प्लान तैयार है। निगमायुक्त ने बताया कि सेनीटेशन टीम को निर्देशित कर दिया है कि वे जोन अनुसार नालों की सफाई के लिए नाला गैंग तैयार करें। प्रत्येक ऐसी टीम में 10 से 15 कर्मचारियों को शामिल कर लें। गलियों में मौजूद छोटी नालियां सफाई कर्मचारियों की ओर से नियमित तौर पर साफ की जा रही हैं।

बता दें कि नालों की साफ-सफाई की मॉनिटरिंग का जिम्मा निगम के अधीक्षण अभियंता श्याम सिंह को दिया गया है। एस.ई. ने एच.एस.वी.पी. के अधीक्षण अभियंता से, मेला राम स्कूल के पीछे मौजूद मुगल कैनाल के हिस्से की साफ-सफाई को लेकर भी बात की है।

उद्यान विभाग हरियाणा द्वारा किसानों को बागवानी योजना एवं किसान जनहित में चल रहें विभिन्न योजनाओं के कि्यान्नयन के लिए राज्य स्तरीय कार्यशाला का आयोजन

करनाल। स्थानीय डॉ. मालसेन सभागार में बागवानी विभाग हरियाणा की विभिन्न योजनाएं एवं जनहित में चल रहें विभिन्न कार्यक्रमों की जागरूकता के लिए राज्य स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में प्रदेश के सभी 22 जिलों के जिला उद्यान अधिकारी एवं विभाग के उच्च अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला की अध्यक्षता महा निदेशक डॉ. अर्जुन सिंह सेनी ने की गई। उन्होंने कहा किसान हित में चल रही योजनाएं के विभाग द्वारा पोर्टल खुशहाल बागवानी पोर्टल ,कोशल पोर्टल पर किसान इन योजनाओं का फायदा उठा सकते हैं। विभाग द्वारा योजनाओं संबंधित की जानकारी टोल फ्री नंबर 1800-1800-2031 पर प्राप्त कर सकते हैं। इस अवसर पर महा निदेशक ने किसानों के हित में चल रही विभिन्न योजनाओं के बारे में विचार विमर्श किया और विभाग के अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए। विभाग ने किसान के हित में काफी कल्याणकारी योजनाएं चलाई जा रही है। इस विषयि वर्ष में विभाग ने हरियाणा में 30000 हैक्टयर क्षेत्रफल बागवानी फसलों के अतारगत लाने का लक्ष्य रखा है। हरियाणा सरकार एवं बागवानी विभाग का ध्यान फसल विविधकरण पर है, ताकि भूमिगत पानी की बचत की जा सके । उन्होंने इस कार्यशाला में दिये गये लक्ष्यो को पूरा करने के लिए उद्यान विभाग के अधिकारियों को दिये निर्देश दिये। महा निदेशक ने मीडिया से बातचीत करते हुए

कहा कि विभाग का मुख्य उद्देश्य ज्यादा से ज्यादा किसानों तक सरकार कि योजनाओं का लाभ पहुंचाना है। इस वर्ष के प्रारम्भ में ही कार्यशाला का आयोजन किया गया है और एक 15 पेज का ब्रोसर तैयार किया गया है। जिसमें विभाग कि सभी योजनाएं निहित है यानी पूरी जानकारी दर्शायी गई हैं उन्होंने बताया कि विभाग के अधिकारी कर्मचारी प्रदेश के सभी गांवों में अगले 2 से अडाई माह के दौरान किसानों के लिए जागरूकता कैम्प का आयोजन क रेगे और उनमें संबधित क्षेत्रो के जन प्रतिनिधि को भी शामिल किया जाएगा। कैम्पों में उपस्थित किसानों को विभाग के ब्रोसर भी वितरित किये जायेगे। उन्होंने यह भी बताया कि ब्लाक स्तर पर फठित टीम एक दिन में कम से कम पांच गांवो को कवर करेगी इस प्रकार से एक महीने में 150 गांवों तथा 2 महीनों में 300 गांवों कवर हो जाएंगें। उन्होंने बताया कि इन कैम्पों में किसानों को पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन कराने की सुविधा भी दी जाएगी।

इस मौके पर उद्यान विभाग के सह-निदेशक डॉ. रणवीर सिंह ने किसान उत्पादक समूह बनाने के दिये निर्देश और विभिन्न गाईड लाईन से अवगत करवाया। उद्यान विभाग के समस्त निदेशक डॉ. मनोज कडू ने विभाग द्वारा चलाई जा रही नर्सरी के अर्थ में किसानों से संबधित योजनाओं के बारे में विस्तार पूर्वक बताया। किसानों को विभाग उत्तम क्वालिटी के सब्जियों के पौधे प्रदान कर सकता है।

रेवाड़ी। सेवा स्तम्भ जिला इकाई की ओर से जिला कार्यालय डॉ बीआर अम्बेडकर पार्क एवं पुस्तकालय मॉडल टाउन रेवाड़ी में जिला प्रधान भगत सिंह सांभरिया की अध्यक्षता में मनाया गया ।सर्वप्रथम महामानव बुद्ध को पुष्प अर्पित करके कैडल प्रज्वलित की गई।उसके बाद जिला प्रधान भागत सिंह सांभरिया व कांशीराम खिंची ने बुद्ध वंदना से कार्यक्रम की शुरुआत की। मंच संचालन आर.पी.सिंह दहिया ने किया। सभी वक्ताओं ने महात्मा बुद्ध की जीवनी व शिक्षाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला व उनकी शिक्षाओं पर अमल करने का संकल्प लिया ।आरपीसिंह दहिया ने अपने वक्तव्य में बताया कि इसे त्रिगुण ,त्रिविध पावन पर्व के नाम से जाना जाता है । संसार में केवल महात्मा बुद्ध ही एक ऐसे महामानव हुए है जिनका जन्म ,ज्ञान प्राप्ति व महारनिर्वाण एक ही शुभ दिन बुद्ध पूर्णिमा को हुआ हो।आर सेंसार मे ऐसी तीन घटनाएं महात्मा बुद्ध के अलावा किसी भी महापुरुष के साथ घटित नहीं हुई है।इस प्रकार बुद्ध पूर्णिमा मंगलकारी एवं पावन पर्व है। इनका जन्म भले ही भारत मे हुआ ,लेकिन आज संसार मे बहुत से देश बुद्धिस्ट है।आज के कार्यक्रम में मेधावी विद्यार्थियों व सामाजिक कार्यकर्ताओं को भी सम्मानित किया गया।जिनमे मुख्य रूप से चंचल सुपुत्री महेंद्र सिंह महेंद्राढ़,मोनिका सुपुत्री अजय रेवाड़िया प्राणपुरा, खुशी सुपुत्री संजय कुमार जैनाबाद,मनीषा दहिया , हार्य कवि व प्रसिद्ध साहित्यकार आलोक भांडीरिया , पत्रकार संजय जैनाबाद आदि को प्रसस्तित पत्र व मैडल पहनाकर सम्मानित किया गया। आज इस शुभ अवसर पर जिला प्रधान भगतसिंह सांभरिया, महासचिव आर.पी सिंह दहिया, चीफ धनपत सिंह गिरादवार, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सृजे सिंह रेवाड़िया, नरेंद्र मेहरा, आलोक भांडीरिया,आचार्य काशीराम, संजय जैनाबाद,डॉ सुनील दत्त,महेंद्र पूर्निया,नितेश मेहरा, देवेन्द्र रेवाड़िया, कर्मबीर श्योराज माजरा , कुमार, कुमार माजरा, बलविंद्र सिंह, मनीषा दहिया,मोनिका ,सुनीता, चंचल आदि उपस्थित रहे।

पाते है की उन्होंने पत्रकारिता को एक अटल दृष्टि दी है। सुधीर कुमार ने कहा की इस तरह की पत्रकारिता से मीडिया एक श्रेष्ठ समाज की रचना में सहयोगी हो सकता है। हरियाणा ग्रन्थ अकादमी के पूर्व उपाध्यक्ष व रेडियो ग्रामोदय के संचालक वीरेंद्र चौहान ने कहा की नारायण शब्द सुनते ही हमारे मन में जो पहली छवि बनती है वह देवर्षि नारद की होती है जो हाथ में वीना लिए भगवान विष्णु का नाम लेते हुए एक जगह से दूसरे जगह भ्रमण करते रहते है। नारद मुनि को एक संचारकर्ता के रूप में जाना जाता है। संचार जीवन के लिए बहुत आवश्यक है। उन्होंने कहा की संचार के माध्यम से ही एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से जुड़ सकता है। यदि जीवन में संचार ना हों तो जीवन शुभ हो जाएगा। आज मनुष्य के पास संचार के कई साधन उपलब्ध है। रेडियो, टेलिविजन, समाचार पत्र, एवं इंटरनेट के जरिए आज एक क्षण में सारी दुनिया की खबर एक साथ पता चल जाती है। किन्तु धरती पर और परलोक में सर्वप्रथम संचार करने का श्रेय नारद

मुनि को ही जाता है। उन्हें सृष्टि का पहला संवाददाता भी कहा जाता है। जो अपना काम एक पत्रकार के रूप में पूरी लगन, ईमानदारी के साथ संपूर्ण करते थे।

इंद्रा गाँधी नेशनल यूनिवर्सिटी के क्षेत्रीय प्रभारी निदेशक डॉ धर्मपाल सिरोही ने समारोह में कहा की नारद मुनी को संचार का अरुणी माना जाता है। संचार हर जीवित जीवन के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संचार के कुछ माध्यमों के माध्यम से विचारों और जानकारी को एक-दूसरे

हिंदुओं का धर्म परिवर्तन गंभीर चिंता का विषय : मां बीना



चंडीगढ़। अंतरराष्ट्रीय हिंदू सेवा संघ के तत्वाधान में विश्व शांति के लिए शुक्रवार को चंडीगढ़ में 51 कुंडीय हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें हरियाणा व पंजाब के कई संतों ने भाग लिया। हिंदू सेवा संघ हरियाणा के अध्यक्ष सुमित कुमार के प्रयासों से शिव मानस मंदिर औद्योगिक क्षेत्र फेज दो आयोजित यह में पहुंची अंतरराष्ट्रीय हिंदू सेवा संघ की राष्ट्रीय प्रवक्ता गुरु मां बीना ने कहा कि आज हिंदुओं के ऊपर सबसे बड़ा खतरा धर्म परिवर्तन का मंडरा रहा है। कुछ विदेशी ताकतों द्वारा लालच देकर हिंदुओं का जबरन धर्म परिवर्तन करवाया जा रहा है। पंजाब व हरियाणा में यह घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। इन्हें रोकने के लिए हिंदू सेवा संघ द्वारा पंजाब व हरियाणा में जागरूकता मुहिम चलाई जाएगी। उन्होंने कहा कि पंजाब व हरियाणा के कस्बों में इस तरह के आयोजनों से हिंदुओं को अपनी विशाल संस्कृति के बारे में अवगत कराते हुए धर्म के प्रति एकजुट होने का संदेश दिया जाएगा। यज्ञ शुरू होने से पहले निर्भय डॉस अकेडमी पंचकूला के छात्रों द्वारा शांति पाठ व शिव स्तुति की प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय हिंदू सेवा संघ के नितिन गर्ग, संजीव ठाकुर, सोनिया मनचंदा, डॉ. विजय शिरा, हरियाणा बाल संरक्षण आयोग की सदस्य डॉ. प्रतिभा सिंह, फैसी ड्रेस के संचालक रजनीश चौधरी, एसआई करण ठाकुर समेत कई गणमान्यों ने हवन यज्ञ में भाग लेकर विश्व शांति की कामना की।

उद्यान विभाग हरियाणा द्वारा किसानों को बागवानी योजनाएं एवं किसान जनहित में चल रहें विभिन्न योजनाओं के कि्यान्नयन के लिए राज्य स्तरीय कार्यशाला का आयोजन

करनाल। स्थानीय डॉ. मालसेन सभागार में बागवानी विभाग हरियाणा की विभिन्न योजनाएं एवं जनहित में चल रहें विभिन्न कार्यक्रमों की जागरूकता के लिए राज्य स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में प्रदेश के सभी 22 जिलों के जिला उद्यान अधिकारी एवं विभाग के उच्च अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यशाला की अध्यक्षता महा निदेशक डॉ. अर्जुन सिंह सेनी ने की गई। उन्होंने कहा किसान हित में चल रही योजनाएं के विभाग द्वारा पोर्टल खुशहाल बागवानी पोर्टल ,कोशल पोर्टल पर किसान इन योजनाओं का फायदा उठा सकते हैं। विभाग द्वारा योजनाओं संबंधित की जानकारी टोल फ्री नंबर 1800-1800-2031 पर प्राप्त कर सकते हैं। इस अवसर पर महा निदेशक ने किसानों के हित में चल रही विभिन्न योजनाओं के बारे में विचार विमर्श किया और विभाग के अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए। विभाग ने किसान के हित में काफी कल्याणकारी योजनाएं चलाई जा रही है। इस विषयि वर्ष में विभाग ने हरियाणा में 30000 हैक्टयर क्षेत्रफल बागवानी फसलों के अतारगत लाने का लक्ष्य रखा है। हरियाणा सरकार एवं बागवानी विभाग का ध्यान फसल विविधकरण पर है, ताकि भूमिगत पानी की बचत की जा सके । उन्होंने इस कार्यशाला में दिये गये लक्ष्यो को पूरा करने के लिए उद्यान विभाग के अधिकारियों को दिये निर्देश दिये। महा निदेशक ने मीडिया से बातचीत करते हुए

सेवा स्तम्भ एवम धम्म भूमि ने मनाया बुद्ध जयन्ती महोत्सव

रेवाड़ी। सेवा स्तम्भ जिला इकाई की ओर से जिला कार्यालय डॉ बीआर अम्बेडकर पार्क एवं पुस्तकालय मॉडल टाउन रेवाड़ी में जिला प्रधान भगत सिंह सांभरिया की अध्यक्षता में मनाया गया ।सर्वप्रथम महामानव बुद्ध को पुष्प अर्पित करके कैडल प्रज्वलित की गई।उसके बाद जिला प्रधान भागत सिंह सांभरिया व कांशीराम खिंची ने बुद्ध वंदना से कार्यक्रम की शुरुआत की। मंच संचालन आर.पी.सिंह दहिया ने किया। सभी वक्ताओं ने महात्मा बुद्ध की जीवनी व शिक्षाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला व उनकी शिक्षाओं पर अमल करने का संकल्प लिया ।आरपीसिंह दहिया ने अपने वक्तव्य में बताया कि इसे त्रिगुण ,त्रिविध पावन पर्व के नाम से जाना जाता है । संसार में केवल महात्मा बुद्ध ही एक ऐसे महामानव हुए है जिनका जन्म ,ज्ञान प्राप्ति व महारनिर्वाण एक ही शुभ दिन बुद्ध पूर्णिमा को हुआ हो।आर सेंसार मे ऐसी तीन घटनाएं महात्मा बुद्ध के अलावा किसी भी महापुरुष के साथ घटित नहीं हुई है।इस प्रकार बुद्ध पूर्णिमा मंगलकारी एवं पावन पर्व है। इनका जन्म भले ही भारत मे हुआ ,लेकिन आज संसार मे बहुत से देश बुद्धिस्ट है।आज के कार्यक्रम में मेधावी विद्यार्थियों व सामाजिक कार्यकर्ताओं को भी सम्मानित किया गया।जिनमे मुख्य रूप से चंचल सुपुत्री महेंद्र सिंह महेंद्राढ़,मोनिका सुपुत्री अजय रेवाड़िया प्राणपुरा, खुशी सुपुत्री संजय कुमार जैनाबाद,मनीषा दहिया , हार्य कवि व प्रसिद्ध साहित्यकार आलोक भांडीरिया , पत्रकार संजय जैनाबाद आदि को प्रसस्तित पत्र व मैडल पहनाकर सम्मानित किया गया। आज इस शुभ अवसर पर जिला प्रधान भगतसिंह सांभरिया, महासचिव आर.पी सिंह दहिया, चीफ धनपत सिंह गिरादवार, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सृजे सिंह रेवाड़िया, नरेंद्र मेहरा, आलोक भांडीरिया,आचार्य काशीराम, संजय जैनाबाद,डॉ सुनील दत्त,महेंद्र पूर्निया,नितेश मेहरा, देवेन्द्र रेवाड़िया, कर्मबीर श्योराज माजरा , कुमार, कुमार माजरा, बलविंद्र सिंह, मनीषा दहिया,मोनिका ,सुनीता, चंचल आदि उपस्थित रहे।

रेवाड़ी। सेवा स्तम्भ जिला इकाई की ओर से जिला कार्यालय डॉ बीआर अम्बेडकर पार्क एवं पुस्तकालय मॉडल टाउन रेवाड़ी में जिला प्रधान भगत सिंह सांभरिया की अध्यक्षता में मनाया गया ।सर्वप्रथम महामानव बुद्ध को पुष्प अर्पित करके कैडल प्रज्वलित की गई।उसके बाद जिला प्रधान भागत सिंह सांभरिया व कांशीराम खिंची ने बुद्ध वंदना से कार्यक्रम की शुरुआत की। मंच संचालन आर.पी.सिंह दहिया ने किया। सभी वक्ताओं ने महात्मा बुद्ध की जीवनी व शिक्षाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला व उनकी शिक्षाओं पर अमल करने का संकल्प लिया ।आरपीसिंह दहिया ने अपने वक्तव्य में बताया कि इसे त्रिगुण ,त्रिविध पावन पर्व के नाम से जाना जाता है । संसार में केवल महात्मा बुद्ध ही एक ऐसे महामानव हुए है जिनका जन्म ,ज्ञान प्राप्ति व महारनिर्वाण एक ही शुभ दिन बुद्ध पूर्णिमा को हुआ हो।आर सेंसार मे ऐसी तीन घटनाएं महात्मा बुद्ध के अलावा किसी भी महापुरुष के साथ घटित नहीं हुई है।इस प्रकार बुद्ध पूर्णिमा मंगलकारी एवं पावन पर्व है। इनका जन्म भले ही भारत मे हुआ ,लेकिन आज संसार मे बहुत से देश बुद्धिस्ट है।आज के कार्यक्रम में मेधावी विद्यार्थियों व सामाजिक कार्यकर्ताओं को भी सम्मानित किया गया।जिनमे मुख्य रूप से चंचल सुपुत्री महेंद्र सिंह महेंद्राढ़,मोनिका सुपुत्री अजय रेवाड़िया प्राणपुरा, खुशी सुपुत्री संजय कुमार जैनाबाद,मनीषा दहिया , हार्य कवि व प्रसिद्ध साहित्यकार आलोक भांडीरिया , पत्रकार संजय जैनाबाद आदि को प्रसस्तित पत्र व मैडल पहनाकर सम्मानित किया गया। आज इस शुभ अवसर पर जिला प्रधान भगतसिंह सांभरिया, महासचिव आर.पी सिंह दहिया, चीफ धनपत सिंह गिरादवार, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सृजे सिंह रेवाड़िया, नरेंद्र मेहरा, आलोक भांडीरिया,आचार्य काशीराम, संजय जैनाबाद,डॉ सुनील दत्त,महेंद्र पूर्निया,नितेश मेहरा, देवेन्द्र रेवाड़िया, कर्मबीर श्योराज माजरा , कुमार, कुमार माजरा, बलविंद्र सिंह, मनीषा दहिया,मोनिका ,सुनीता, चंचल आदि उपस्थित रहे।

पाते है की उन्होंने पत्रकारिता को एक अटल दृष्टि दी है। सुधीर कुमार ने कहा की इस तरह की पत्रकारिता से मीडिया एक श्रेष्ठ समाज की रचना में सहयोगी हो सकता है। हरियाणा ग्रन्थ अकादमी के पूर्व उपाध्यक्ष व रेडियो ग्रामोदय के संचालक वीरेंद्र चौहान ने कहा की नारायण शब्द सुनते ही हमारे मन में जो पहली छवि बनती है वह देवर्षि नारद की होती है जो हाथ में वीना लिए भगवान विष्णु का नाम लेते हुए एक जगह से दूसरे जगह भ्रमण करते रहते है। नारद मुनि को एक संचारकर्ता के रूप में जाना जाता है। संचार जीवन के लिए बहुत आवश्यक है। उन्होंने कहा की संचार के माध्यम से ही एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से जुड़ सकता है। यदि जीवन में संचार ना हों तो जीवन शुभ हो जाएगा। आज मनुष्य के पास संचार के कई साधन उपलब्ध है। रेडियो, टेलिविजन, समाचार पत्र, एवं इंटरनेट के जरिए आज एक क्षण में सारी दुनिया की खबर एक साथ पता चल जाती है। किन्तु धरती पर और परलोक में सर्वप्रथम संचार करने का श्रेय नारद

मुनि को ही जाता है। उन्हें सृष्टि का पहला संवाददाता भी कहा जाता है। जो अपना काम एक पत्रकार के रूप में पूरी लगन, ईमानदारी के साथ संपूर्ण करते थे।

सरकार व प्रशासन भिवाड़ी से आने वाले दूषित पानी की समस्या के समाधान के लिए पूरी तरह गंभीर : डीसी



रेवाड़ी। डीसी मोहम्मद इमरान रजा ने शुक्रवार को एसपी दीपक सहारण व अन्य प्रशासनिक अधिकारियों के साथ राजस्थान के भिवाड़ी क्षेत्र से हरियाणा प्रदेश के धारुहेड़ा क्षेत्र में आ रहे गंदे पानी की निकासी व्यवस्था को लेकर मौका निरीक्षण किया और जलभराव की समस्या के स्थाई समाधान बारे आवश्यक निर्देश दिए। डीसी ने कहा कि सरकार व प्रशासन इस समस्या के समाधान को लेकर पूरी तरह गंभीर हैं। उन्होंने संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिए कि धारुहेड़ा क्षेत्र व राष्ट्रीय राजमार्ग पर जलभराव की समस्या के समाधान के लिए प्रभावी कदम उठाते हुए कार्यवाही अमल में लाएं ताकि इस समस्या का समाधान सुनिश्चित किया जा सके। उन्होंने कहा कि जलभराव की समस्या के स्थाई समाधान पर प्रशासन का पूरा फोकस है और प्रशासन इस दिशा में सजगता से कार्य कर रहा है। डीसी मोहम्मद इमरान रजा ने कहा कि योजनाबद्ध तरीके से कदम उठाते हुए इस समस्या के समाधान के लिए एडीसी स्वनिल रविंद्र पाटिल की अध्यक्षता में संबंधित विभागीय अधिकारियों, शहरी निकाय प्रतिनिधियों व औद्योगिक इकाइयों के जनप्रतिनिधियों की कॉर्डिनेशन कमेटी का गठन किया गया जिसके तहत जलभराव की समस्या के समाधान के लिए विभागीय स्तर पर रूपरेखा तैयार करते हुए कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राजस्थान के भिवाड़ी क्षेत्र से हरियाणा के धारुहेड़ा क्षेत्र में आने वाले दूषित पानी के ट्रीटमेंट के लिए भी सजगता बरती जा रही है ताकि गंदे पानी के

फलों के कारण लोगों को परेशानी न हो। उन्होंने कहा कि दूषित पानी का ट्रीटमेंट करवाने के साथ ही धारुहेड़ा की औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले दूषित जल को भी जल उपचार संयंत्र के माध्यम से ट्रीट करना बेहद जरूरी है। जलभराव की स्थिति से निपटने के लिए उक्त दूषित पानी का डिस्पोजल सही तरीके से करने के लिए भी

डीसी मोहम्मद इमरान रजा ने कहा कि योजनाबद्ध तरीके से कदम उठाते हुए इस समस्या के समाधान के लिए एडीसी स्वनिल रविंद्र पाटिल की अध्यक्षता में संबंधित विभागीय अधिकारियों, शहरी निकाय प्रतिनिधियों व औद्योगिक इकाइयों के जनप्रतिनिधियों की कॉर्डिनेशन कमेटी का गठन किया गया

कदम उठाए जाने बेहद आवश्यक हैं। डीसी द्वारा किए गए निरीक्षण के दौरान एसपी दीपक सहारण, एडीसी स्वनिल रविंद्र पाटिल, डीएमसी ड. सुभिता ढक्का, एसडीएम रेवाड़ी होशियार सिंह, धारुहेड़ा नगर पालिका चेयरमैन कंचर सिंह, आरसीसीआई के अध्यक्ष विजय शर्मा, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आरओ विनोद बालियान, हर्षाप्रिया के ईओ विकास ढांडा सहित अन्य संबंधित विभागीय अधिकारियों मौजूद रहे।

एनएनपीएजे व मसालेदार ख़बरों से बचें-एडीसी वैशाली शर्मा

करनाल। पंचायत भवन के सभागार में शुक्रवार को नारद जयंती के उपलक्ष्य में विजय संवाद केंद्र की तरफ से पत्रकार संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। नारद स्मृति के रूप में आयोजित इस कार्यक्रम में विभिन्न वक्ताओं ने नारद के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। साथ ही हजारों वर्ष पूर्व नारद जी के द्वारा किए गए कार्यों को आज की पत्रकारिता से जोड़ा गया। इस दौरान वर्तमान समय में पत्रकारिता की उपयोगिता के बारे में वक्ताओं ने अपने विचारों को व्यक्त किया। कार्यक्रम में जिले भर से आये सौ से अधिक पत्रकारों को सम्मानित भी किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कुरुक्षेत्र विभाग संचालक सुधीर कुमार, मुख्य अतिथि करनाल की अतिरिक्त उपयुक्त डॉ. वैशाली शर्मा रही। समारोह की अध्यक्षता एनो इंडिया के राष्ट्रीय एचआर हेड यशपाल केहरवाला ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में इनू के क्षेत्रीय प्रभारी निदेशक डॉ धर्मपाल सिरोही, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी के पूर्व वॉइस चेयरमैन वीरेंद्र चौहान, समाजसेवी अनुप भद्राज, अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी मधु कुमार तथा एशियाड खेलों के कोच जसवंत सिंह विशेष तौर पर मौजूद रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि व अन्य अतिथियों ने दीप

प्रज्वलित करके किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. वैशाली शर्मा ने कहा कि नारद जी लोक मंगल की भावना व कामना के साथ तीनों लोकों में भ्रमण कर उनका हाल समाचार लेकर सूचनाओं का आदान-प्रदान करते थे। उस समय पत्रकारिता का उद्देश्य लोक मंगल ही था और वर्तमान में भी पत्रकारों का उद्देश्य लोक मंगल ही होना चाहिये। उन्होंने कहा कि पत्रकारों को मसालेदार व सनसनीखेज समाचारों से बचना चाहिए। डॉ. वैशाली शर्मा ने कहा की रचनात्मक खबरों से माहौल सकारात्मक होता है। कुछ खबरें जहाँ सरकार और आम आदमी के बीच संतु का काम करती है, इनसे आम जनता की समस्याएं प्रशासन तक पहुँचती हैं वहीं कुछ खबरें समाज में वैमनस्य भी पैदा कर सकती हैं।

कार्यक्रम अध्यक्ष यशपाल केहरवाला ने अपने संबोधन में कहा कि पं. जुगल किशोर शुक्ल द्वारा प्रथम समाचार पत्र उदत मारतंड के माध्यम से प्रारंभ किया गया था जो नारद जयंती के दिन ही शुरू किया गया था। नारदजी विष्णु भगवान के परम भक्तों में से एक माने जाते हैं। देवर्षि नारद मुनि विभिन्न लोकों में यात्रा करते थे, जिनमें पृथ्वी, आकाश और पाताल का समावेश होता था। ताकि देवी-देवताओं तक संदेश और सूचना



का संचार किया जा सके। कहा जाता है कि नारद मुनि सच्चे सहायक के रूप में हमेशा सच्चे और निर्दोष लोगों की पुकार श्री हरि तक पहुँचाते थे। इन्होंने देवताओं के साथ-साथ असुरों का भी सही मार्गदर्शन किया। यही वजह है कि सभी लोकों में उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। उन्होंने कहा की नारद जी से सभी को संस्कारित पत्रकारिता की प्रेरणा लेनी चाहिए। मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कुरुक्षेत्र के विभाग संचालक सुधीर कुमार ने कहा की पत्रकारिता तथ्यों को समेटती है, उनका विश्लेषण करती है व उसके बाद उसकी अनुभूति करके दूसरों के लिए अभिव्यक्त होती है। एक ओर इसका परिणाम दुःख दर्द, ईर्ष्या, प्रतिद्वंद्वता, द्वेष व सत्यता को बाँटना हो सकता है। या फिर सुख शांति प्रेम व मैत्री का प्रसाद भी हो

सकता है। इनमें से कौन सा विकल्प लेना है यह समाज को तय करना है। उन्होंने कहा की इस तरह नारद जी के भक्ति सूत्रों का विश्लेषण किया जाता है नारद जी के चरित्र का हम अध्ययन करते हैं तो पाते है की उन्होंने पत्रकारिता को एक अटल दृष्टि दी है। सुधीर कुमार ने कहा की इस तरह की पत्रकारिता से मीडिया एक श्रेष्ठ समाज की रचना में सहायगी हो सकता है। हरियाणा ग्रन्थ अकादमी के पूर्व उपाध्यक्ष व रेडियो ग्रामोदय के संचालक वीरेंद्र चौहान ने कहा की नारायण शब्द सुनते ही हमारे मन में जो पहली छवि बनती है वह देवर्षि नारद की होती है जो ह्यथ में वीना लिए भगवान विष्णु का नाम लेते हुए एक जगह से दूसरे जगह भ्रमण करते रहते हैं। नारद मुनि को एक संचारकर्ता के रूप में जाना जाता है। संचार जीवन के

लिए बहुत आवश्यक है। उन्होंने कहा की संचार के माध्यम से ही एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से जुड़

सकता है। यदि जीवन में संचार न हों तो जीवन सूच्य हो जाएगा। आज मनुष्य के पास संचार के कई साधन उपलब्ध है। रेडियो, टेलिविजन, समाचार पत्र, एवं इंटरनेट के जरिए आज एक क्षण में सारी दुनिया की खबर एक साथ पता चल जाती है। किन्तु धरती पर और परलोक में सर्वप्रथम संचार करने का श्रेय नारद

मुनि को ही जाता है। उन्हें सृष्टि का पहला संवाददाता भी कहा जाता है। जो अपना काम एक पत्रकार के रूप में पूरी लगन, ईमानदारी के साथ संपूर्ण करते थे।

इंदिरा गाँधी नेशनल यूनिवर्सिटी के क्षेत्रीय प्रभारी निदेशक डॉ धर्मपाल सिरोही ने समारोह में कहा की नारद मुनि को संचार की अग्रणी माना जाता है। संचार हर जीवित जीवन के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संचार के कुछ माध्यमों के माध्यम से विचारों और जानकारी को एक-दूसरे के साथ साझा करना संभव है। पूर्व-ऐतिहासिक काल से संचार प्रक्रिया प्रचलित रही है। न केवल इंसान बल्कि पौधे और जानवर भी अपनी भाषा में संवाद करते हैं। उन्होंने कहा की देवर्षि नारद ने इस लोक से उस लोक में परिक्रमा करते

हिसार में पहलवानों के समर्थन में आप का प्रदर्शन

हिसार। पहलवानों के धरने के समर्थन और भारतीय कुश्ती संघ के अध्यक्ष बृजभूषण की गिरफ्तारी की मांग को लेकर आज हिसार में आम आदमी पार्टी विरोध प्रदर्शन करेगी। हिसार में जिला मुख्यालय में सामाजिक संगठनों व जनता के साथ शाम 6 बजे इकट्ठे होकर शहर के प्रमुख बाजार में मशाल मार्च निकालेंगे। प्रदर्शन के दौरान आम आदमी पार्टी न तो पार्टी के झंडे का इस्तेमाल करेगी और न ही कहीं पार्टी के पक्ष में कोई नारेबाजी करेगी। आप नेताओं का कहना है कि ये देश की बेटीयों के मान सम्मान से जुड़ा मामला है, हम देश के प्रति जिम्मेदारी देश के आम नागरिक बन्के निभाएंगे। आप नेता उमेश शर्मा का कहना है कि हरियाणा पहलवानों की धरती है, यहां के बेटे ही नहीं, बेटियों ने भी पहलवानों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ढेरों मेडल जीतकर देश का गौरव बढ़ाया है। आज देश के पहलवान खतरे में हैं, हरियाणा की बेटियों को अपमानित किया जा रहा है। दिल्ली में जंतर मंतर पर हरियाणा के पहलवान भारतीय कुश्ती संघ के

अध्यक्ष बृजभूषण शरण के खिलाफ यौन शोषण के आरोप लगाते हुए धरना दे रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद बृजभूषण पर एफआईआर दर्ज हो चुकी है। सभी उसकी



गिरफ्तारी की मांग कर रहे हैं। पहलवानों के साथ हुई बदसलूकी के विरोध में कल हिसार में टोल भी दो घंटे के लिए फ्री कर दिए गए थे।

निजामपुर। नांगल चौधरी के विधायक डॉ अभय सिंह यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री परिवार उद्यान योजना सरकार का फ्लैगशिप कार्यक्रम है। इस योजना के तहत कौशल विकास, स्वरोजगार और रोजगार सृजन किया जा रहा है। इस योजना के लाभार्थी अधिक से अधिक संख्या में इस कार्यक्रम का लाभ उठाएँ। श्री यादव आज निजामपुर खंड में मुख्यमंत्री अंत्योदय परिवार उद्यान योजना के तहत लो अंत्योदय मेले के शुभारंभ अवसर पर बोल रहे थे। आज पहले दिन लगभग 115 लाभार्थी इस मेले में पहुंचे। अंत्योदय मेला 6 मई को भी निजामपुर में लगेगा। विधायक ने कहा कि हरियाणा सरकार का प्रयास



है कि गरीब नागरिकों को किसी ने किसी एक महत्वपूर्ण योजना के साथ जोड़कर उनका आर्थिक उद्यान किया जा सके। मुख्यमंत्री अंत्योदय परिवार उद्यान योजना हरियाणा सरकार की एक पहल है जिसके जरिए राज्य में सबसे गरीब परिवारों की पहचान की गई है। उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत कौशल विकास, स्वरोजगार और रोजगार सृजन के उपायों का एक पैकेज तैयार किया गया है। सरकार की कोशिश है कि हर परिवार के पास रोजगार का कुछ ना कुछ साधन हो।

पुलिस डायरी

टाउन पार्क में मिले शव के मामले में सेंट्रल थाने में अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ हत्या की धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज

फरीदाबाद की आवाज
फरीदाबाद। टाउन पार्क के पास मिले युवक के शव के मामले में पुलिस ने अज्ञात आरोपी के खिलाफ हत्या की धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज करके जांच शुरू कर दी है। सूचना मिलते ही डीसीपी सेंट्रल पूजा वशिष्ठ, डीसीपी क्राइम मुकेश कुमार मल्होत्रा, एसपी सेंट्रल, क्राइम ब्रांच 30, डीएलएफ व थाना प्रभारी को टीम एफएसएल टीम के साथ मौके पर पहुंची और मौका मुआयना करके शव को मोचरी में रखवाया गया। पुलिस प्रवक्ता सूबे सिंह ने बताया कि मृतक व्यक्ति को पहचान प्यारो नाम से हुई है जो मेरठ में रहता था जिसकी उम्र करीब 35 वर्ष है और फरीदाबाद के मवाई गांव में अपने साढ़ के लड़के की शादी में आया था। लड़के की बात डबुआ गई थी जहाँ पर रात 1 बजे के पश्चात युवक गायब बताया जा रहा था जिसका शव सुबह पार्क के पास बरामद किया गया। मृतक के गले में साफा बंधा हुआ है जिससे प्रतीत होता है कि उस कपड़े से गला घोट कर युवक की हत्या की गई है जिसे पुलिस द्वारा बरामद किया गया है। पुलिस ने अज्ञात आरोपी के खिलाफ हत्या की धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज करके मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस द्वारा आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं और आसपास के लोगों से पूछताछ की जा रही है। शव अस्पताल की मोचरी में रखवाया गया है। पुलिस प्रवक्ता ने कहा कि मामले में शामिल आरोपियों की जल्द से जल्द धरपकड़ करके उन्हें कानून के तहत सख्त सजा दिलाई जाएगी।

क्राइम ब्रांच सेंट्रल ने यमुना सरिता चोरी करने वाले आरोपी को गिरफ्तार कर 3 हाईवा ट्रक और 1 जेसीबी की बरामद

फरीदाबाद की आवाज
फरीदाबाद। डीसीपी क्राइम मुकेश कुमार मल्होत्रा के दिशा निर्देश के तहत कार्रवाई करते हुए क्राइम ब्रांच 85 प्रभारी जोगिंदर सिंह की टीम ने स्लेचिंग के मुकदमे में एक नाबालिक सहित दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस प्रवक्ता सूबे सिंह ने बताया कि गिरफ्तार किए गए आरोपी का नाम कमल उर्फ काले है जो दिल्ली के अली विहार का रहने वाला है। आरोपी सरिता विहार थाने का हिस्ट्रीशीटर है और नशा करने का आदी है। आरोपी के खिलाफ चोरी, लूट, डकैती की योजना, लूट का प्रयास, स्लैचिंग, अवैध हथियार, अवैध शराब इत्यादि की धाराओं के तहत 32 मुकदमे दर्ज हैं जिसमें ज्यादातर मुकदमे दिल्ली के शामिल हैं। आरोपी ने अपने एक नाबालिक साथी के साथ मिलकर सिटी बल्लभगढ़ परिया में स्लैचिंग की वारदात को अंजाम दिया था जिसमें उसने एक राह चलते व्यक्ति से मोबाइल छीना था। थाने में स्लैचिंग की धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज करके आरोपी की तलाश शुरू की गई जिसमें आगे कार्रवाई करते हुए क्राइम ब्रांच की टीम ने गुप्त सूत्रों की सूचना के आधार पर कल आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी के कब्जे से छीना हुआ मोबाइल और वारदात में उपयोग मोटरसाइकिल बरामद की गई है।

वाहन चोरी के मामले में क्राइम ब्रांच 56 ने दो आरोपियों को किया गिरफ्तार, पिकअप बरामद

एयर इंडिया कम्पनी में नौकरी लगवाने के नाम पर लोगों के साथ साइबर दंगी की वारदात को अंजाम देने वाले गिरोह का पर्दाफाश

फरीदाबाद की आवाज
फरीदाबाद। डीसीपी साइबर क्राइम बल्लभगढ़ अमित यशवर्धन के दिशा निर्देश के तहत कार्रवाई करते हुए साइबर थाना बल्लभगढ़ प्रभारी नवीन कुमार व उनकी टीम ने एयर इंडिया कंपनी में नौकरी लगवाने के नाम पर साइबर ठगी की वारदात को अंजाम देने वाले गिरोह का पर्दाफाश करते हुए गिरोह के 9 सदस्यों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। डीसीपी अमित यशवर्धन ने प्रेस वार्ता के दौरान बताया कि गिरफ्तार किए गए आरोपियों में अभय, रवि, विजय उर्फ बबलू, हिमांशु, नितेश, राहुल, रजनीश, खुशबू तथा रिया का नाम शामिल है। आरोपी

अभय तथा रवि उत्तर प्रदेश के नोएडा व अन्य आरोपी गाजियाबाद के रहने वाले हैं। आरोपी बहुत ही शांतरि किस्म के अपराधी हैं जो भोले भाले लोगों को साइबर ठगी के जाल में फंसाकर उनके पैसे ऐंट लेते हैं। आरोपी फेसबुक के माध्यम से नौकरी ढूँढ रहे आम नागरिकों को अपना निशाना बनाते हैं। आरोपी इन युवाओं को अपने झांसे में लेते हैं और अपने आपको एयर इंडिया के अधिकारी बताकर सामने वाले व्यक्ति से संपर्क करते हैं। आरोपी अपने आपको एयर इंडिया कंपनी का अधिकारी बनाकर अलग-अलग डिपार्टमेंट से कॉल करते हैं और उन्हें एक अच्छी नौकरी का तथ्या रिया का नाम शामिल है। आरोपी



हैं। बेरोजगार युवा नौकरी के लालच में आकर उनकी बात मान लेता है जिसके पश्चात आरोपी एयर इंडिया का एक फर्जी जॉब लेटर तैयार करके उस व्यक्ति को भेजते हैं और सामने वाला व्यक्ति समझता है कि वह एयर इंडिया का असली ऑफर लेटर है। इसके

एक महिला के साथ 241349 की ठगी की वारदात को अंजाम दिया था। महिला को जब इस ठगी का एहसास हुआ तो उसने इसकी शिकायत साइबर थाने में की जिसके पश्चात आरोपियों के खिलाफ धोखाधड़ी की धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज करके मामले की जांच शुरू की गई। आरोपियों की धरपकड़ के लिए थाना प्रभारी के नेतृत्व में पुलिस टीम का गठन किया गया जिसमें एसआई विकास व प्रवीण, एसएसआई अनूप, दीपक, मुख्य सिपाही भूपेंद्र व नावेद, सिपाही आजाद, प्रदीप, विक्रान्त तथा महिला सिपाही मनीषा का नाम शामिल था। पुलिस ने इस मामले में कड़ी मशकत

करते हुए तकनीकी व गुप्त सूत्रों की सहायता से मामले में शामिल उक्त आरोपियों को नोएडा व गाजियाबाद से गिरफ्तार कर लिया जिसमें 2 लड़कियां भी शामिल थीं। दोनों लड़कियों को अदालत में पेश करके जेल भेज दिया गया वहीं अन्य आरोपियों को 5 दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया जिसमें पुलिस पूछताछ में सामने आया कि आरोपियों के फर्जी बैंक खातों में 20 लाख रुपए का लेनदेन पाया गया है और आरोपियों द्वारा उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र सहित देश के कई अन्य इलाकों से साइबर ठगी की वारदातों का किया जाना पाया गया है।

आरोपी के कब्जे से छीना हुआ मोबाइल और वारदात में उपयोग मोटरसाइकिल बरामद

फरीदाबाद की आवाज
फरीदाबाद। डीसीपी क्राइम मुकेश कुमार मल्होत्रा के दिशा निर्देश के तहत कार्रवाई करते हुए क्राइम ब्रांच 85 प्रभारी जोगिंदर सिंह की टीम ने स्लेचिंग के मुकदमे में एक नाबालिक सहित दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस प्रवक्ता सूबे सिंह ने बताया कि गिरफ्तार किए गए आरोपी का नाम कमल उर्फ काले है जो दिल्ली के अली विहार का रहने वाला है। आरोपी सरिता विहार थाने का हिस्ट्रीशीटर है और नशा करने का आदी है। आरोपी के खिलाफ चोरी, लूट, डकैती की योजना, लूट का प्रयास, स्लैचिंग, अवैध हथियार, अवैध शराब इत्यादि की धाराओं के तहत 32 मुकदमे दर्ज हैं जिसमें ज्यादातर मुकदमे दिल्ली के शामिल हैं। आरोपी ने अपने एक नाबालिक साथी के साथ मिलकर सिटी बल्लभगढ़ परिया में स्लैचिंग की वारदात को अंजाम दिया था जिसमें उसने एक राह चलते व्यक्ति से मोबाइल छीना था। थाने में स्लैचिंग की धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज करके आरोपी की तलाश शुरू की गई जिसमें आगे कार्रवाई करते हुए क्राइम ब्रांच की टीम ने गुप्त सूत्रों की सूचना के आधार पर कल आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी के कब्जे से छीना हुआ मोबाइल और वारदात में उपयोग मोटरसाइकिल बरामद की गई है।



आरोपी के साथ उसके नाबालिक साथी को भी काबू करके जूड़ल बोर्ड के सम्मुख पेश किया गया। पुलिस पूछताछ में सामने आया कि आरोपी नशे की आपूर्ति के लिए ही इस प्रकार की वारदातों को अंजाम देता है जिसने अब तक बहुत से आपराधिक वारदातों को अंजाम दिया है। पुलिस पूछताछ पूरी होने के पश्चात आरोपी को अदालत में पेश करके जेल भेज दिया गया है।

शादी का झांसा देकर युवती के साथ दुष्कर्म की वारदात को अंजाम देने वाले आरोपी को महिला थाना बल्लभगढ़ की टीम ने आगरा से किया गिरफ्तार

फरीदाबाद की आवाज
फरीदाबाद। पुलिस आयुक्त विकास कुमार अरोड़ा के दिशा निर्देश के तहत कार्रवाई करते हुए महिला थाना बल्लभगढ़ प्रभारी इंस्पेक्टर इंदुबाला उनकी टीम ने दुष्कर्म के मामले में 6 महीने से फरार चल रहे आरोपी को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। इस मामले में एक अन्य आरोपी को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका है। पुलिस प्रवक्ता सूबे सिंह ने बताया कि गिरफ्तार किए गए आरोपी का नाम रजत है जो आगरा का रहने वाला है। आरोपी रजत और विवेक के खिलाफ अक्टूबर 2022 में दुष्कर्म व घड्यंत्र की धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज किया गया था जिसमें आरोपी रजत और विवेक ने एक युवती के साथ दुष्कर्म की वारदात को अंजाम दिया था। पुलिस व लीगल एड को दिए अपने बयान में पीड़िता ने बताया कि वह 23 वर्ष की है और दसवीं कक्षा तक पढ़ी हुई है। वर्ष 2017 में उसकी दोस्ती फेसबुक के माध्यम से आरोपी रजत के साथ हुई थी। आरोपी रजत ने उसे वर्ष 2017 में ही शादी के लिए हॉ की थी जिसके पश्चात दोनों परिवारों का आपस में आना-जाना शुरू हो गया। पीड़िता ने बताया कि आरोपी ने उसे होटल में लेजाकर शादी का झांसा देकर कई बार उसके साथ दुष्कर्म की वारदात को अंजाम दिया। इसके पश्चात वर्ष 2020 में

एक विवेक नाम के लड़के का पीड़िता के पास फोन आया और उसने पीड़िता को मिलने के लिए बाहर बुलाया जहाँ पर उसने अपने फोन में पीड़िता और रजत की अश्लील फोटो दिखाई और उसे ब्लैकमेल करने लगा। आरोपी विवेक ने पीड़िता को ब्लैकमेल करके उसके साथ कई बार अवैध संबंध स्थापित किए। वर्ष 2021 में पीड़िता ने यह बात रजत को बताई। इसके पश्चात वर्ष 2022 में आरोपी रजत ने फिर से युवती को होटल में बुलाकर उसके साथ दुष्कर्म की वारदात को अंजाम दिया। सितंबर 2022 में रजत ने किसी और लड़की के साथ सगाई कर ली जिसका पता चलने पर पीड़िता ने रजत से बात की तो रजत ने बताया कि वह उससे शादी नहीं कर सकता। पीड़िता ने यह बात अपने परिजनों को बताई जिसके पश्चात पीड़िता ने पुलिस में अपनी शिकायत दी जिसके आधार पर दुष्कर्म व धोखाधड़ी की धाराओं के तहत आरोपी रजत और विवेक के खिलाफ दुष्कर्म और धोखाधड़ी की धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज करके आरोपियों को बतार्ड किया गया है। मामले में आगे कार्रवाई करते हुए पुलिस ने नवंबर 2022 में आरोपी विवेक को गिरफ्तार कर लिया परंतु आरोपी रजत फरार चल रहा था जिसे पुलिस ने गुप्त सूत्रों की सूचना के आधार पर आगरा से गिरफ्तार किया है।

आरोपी सूबेदार पलवल का निवासी है। दिनांक 8 अप्रैल 2023 को सिटी बल्लभगढ़ थाने में चोरी की धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज किया गया था जिसमें आरोपियों ने बल्लभगढ़ से एक पिकअप चोरी की थी। क्राइम ब्रांच की टीम ने गुप्त सूत्रों की सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए आरोपियों को 1 मई को पलवल बस स्टैंड से गिरफ्तार कर

फरीदाबाद की आवाज
फरीदाबाद। डीसीपी क्राइम मुकेश कुमार मल्होत्रा के दिशा निर्देश के तहत कार्रवाई करते हुए क्राइम ब्रांच 56 प्रभारी सुदर सिंह की टीम ने वाहन चोरी के मुकदमे में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस प्रवक्ता सूबे सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि गिरफ्तार किए गए आरोपियों में फैजल तथा सुबेदार उर्फ सुबू का नाम शामिल है। आरोपी फैजल राजस्थान के भरतपुर का रहने वाला है वहीं



आरोपी सूबेदार पलवल का निवासी है। दिनांक 8 अप्रैल 2023 को सिटी बल्लभगढ़ थाने में चोरी की धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज किया गया था जिसमें आरोपियों ने बल्लभगढ़ से एक पिकअप चोरी की थी। क्राइम ब्रांच की टीम ने गुप्त सूत्रों की सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए आरोपियों को 1 मई को पलवल बस स्टैंड से गिरफ्तार कर

आरोपी सूबेदार पलवल का निवासी है। दिनांक 8 अप्रैल 2023 को सिटी बल्लभगढ़ थाने में चोरी की धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज किया गया था जिसमें आरोपियों ने बल्लभगढ़ से एक पिकअप चोरी की थी। क्राइम ब्रांच की टीम ने गुप्त सूत्रों की सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए आरोपियों को 1 मई को पलवल बस स्टैंड से गिरफ्तार कर

आरोपी सूबेदार पलवल का निवासी है। दिनांक 8 अप्रैल 2023 को सिटी बल्लभगढ़ थाने में चोरी की धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज किया गया था जिसमें आरोपियों ने बल्लभगढ़ से एक पिकअप चोरी की थी। क्राइम ब्रांच की टीम ने गुप्त सूत्रों की सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए आरोपियों को 1 मई को पलवल बस स्टैंड से गिरफ्तार कर



ऐसे बने घर में अपने बच्चों के टीचर

ग्लोबल टीचर प्राइज जीतने वाली ब्रिटेन की शिक्षिका एंड्रिया जाफिरकाऊ कहती हैं कि आभासी तरीके से बच्चों को पढ़ाना कठिन है क्योंकि कक्षा का माहौल बच्चों को एकाग्र बनाता है। वह कहती हैं कि इस वक्त शिक्षकों को यह बात दिमाग में रखकर काम करना चाहिए कि बच्चों के पास कौन से संसाधन उपलब्ध होंगे। उसके हिसाब से ही बच्चों को काम दें। साथ ही शिक्षकों की प्राथमिकता ऐसी रचनात्मक गतिविधियां कराना होना चाहिए कि बच्चों का स्क्रीन टाइम घट सके। वे घर में रंग, कागज, कलम और रोचक खेल खेलते हुए समय बिताएं। कोरोना वायरस की इस लड़ाई ने मासूम बच्चों को उनके स्कूल, टीचर और दोस्तों से दूर कर दिया है। पर बच्चों के लिए सबसे जरूरी उनकी पढ़ाई है इसलिए कोविड-19 से लड़ रहे देशों में ई-लर्निंग को वैकल्पिक माध्यम बनाया जा रहा है। इस तकनीक के बावजूद अभिभावकों के लिए यह समय चुनौतीभरा है क्योंकि बच्चों को पढ़ाने का दारोमदार पूरी तरह उन पर आ गया है। आइए आज जानते हैं कि अभिभावक घर में रहकर अपने बच्चों को ई-माध्यमों से पढ़ाई के लिए किस तरह प्रोत्साहित कर सकते हैं और

शिक्षक की भूमिका निभा सकते हैं।

अरब दुनिया के बच्चे स्कूल से हैं दूर - विश्व आर्थिक मंच ने संस्कृति व शिक्षा से जुड़े प्रतिनिधियों के साथ कोरोना

वायरस के दौर की चुनौतियों पर चर्चा की। इस दौरान वहां मौजूद शिक्षकों ने माना कि अपने बच्चे को पढ़ाना दुनिया में सबसे ज्यादा कठिन काम है क्योंकि वह अभिभावक की जगह शिक्षक से पढ़ने का आदी होता है। ऐसे में अभिभावकों की चुनौतियां बहुत अधिक हैं, इन विशेषज्ञों ने अभिभावकों के लिए ये सुझाव दिए हैं।

सवाल पूछने दें - रचनात्मकता सवालों से पैदा होती है, बच्चों के हर सवाल को धैर्य से सुनें और उसका हल खोजने में उनकी मदद करें। लक्ष्य तय करें - हर दिन के लिए एक लक्ष्य या चुनौती तय करें, जिससे बच्चों के साथ मिलकर पूरा करने में लग जाएं। उन्हें पूरा समय दें। **री-डू सिखाएं** - घर में पड़े इस्तेमाल न होने वाले सामान को निकालकर बच्चों संग उससे

शिक्षकों को यह बात दिमाग में रखकर काम करना चाहिए कि बच्चों के पास कौन से संसाधन उपलब्ध होंगे। उसके हिसाब से ही बच्चों को काम दें। साथ ही शिक्षकों की प्राथमिकता ऐसी रचनात्मक गतिविधियां कराना होना चाहिए कि बच्चों का स्क्रीन टाइम घट सके।

कुछ रचनात्मक बनाएं इससे बच्चों में पुरानी चीजों के दोबारा इस्तेमाल की आदत बनेगी।

ऑनलाइन मदद - पढ़ाई या कुछ रचनात्मक बनाने समय ऑनलाइन माध्यमों की मदद लेने से न झिझकें, हर वक्त बच्चों के सामने परफेक्ट दिखने सही नहीं। अलग सोचे - बच्चों की आर्ट, क्राफ्ट से बाहर की रचनात्मक दुनिया से पहचान करवाएं। कपड़े कैसे तय करें, कमरे को सफाई, किचन आदि काम सिखाएं।

स्कूल वापसी - इस बात को सुनिश्चित करें कि बच्चे अपने शिक्षक और दोस्तों के संपर्क में बने रहे क्योंकि तब ही उनके मन में स्कूल वापस लौटने का ख्याल बना रहेगा। **तकनीक सीखें** - ई-लर्निंग के जरिए अगर बच्चा पढ़ रहा है तो इस दौरान उसे तकनीक संबंधी समस्या आ सकती है इसलिए बच्चे के साथ मिलकर इन तकनीकों को सीखें।



नमक, स्वाद के साथ-साथ सेहत के लिए भी उपयोगी है। मगर, हर चीज की एक तय सीमा होती है। इसी तरह नमक से ज्यादा प्यार भी आपकी सेहत के लिए हजारे खतरे पैदा कर सकता है। बेशक आपको नमक इतना पसंद है कि आप सब्जी में ऊपर से नमक डालने को मजबूर हो जाती हैं, लेकिन इस आदत के जरिए आप अनजाने ही कई बीमारियों को न्योता दे रही होती हैं।

खाने में ज्यादा नमक का सेवन करने लगते हैं। यह मात्रा कई बार रोजाना नौ से दस ग्राम नमक के सेवन तक पहुंच जाती है। रोजाना की डाइट में नमक की मात्रा पांच ग्राम तक ही सीमित रखें। हमेशा याद रखें कि बिना डॉक्टर की सलाह के कभी भी नमक का सेवन पूरी तरह से बंद नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से भी आपको सेहत से जुड़ी परेशानियां हो सकती हैं।

विकल्प हैं बेहतर

अगर आपको ज्यादा नमक खाने की आदत है, तो इससे निजात पाने के लिए नमक के अन्य विकल्पों पर अपना ध्यान केंद्रित करें। इसके लिए आप नींबू और सिरका की मदद ले सकती हैं। स्वाद के लिहाज से नमक की कमी को यह काफी हद तक पूरा करते हैं। अदरक, लहसुन और कुछ सूखे मसाले भी इसमें मददगार साबित हो सकते हैं। बेशक ये नमक का विकल्प नहीं बन सकते हैं, लेकिन नमक की ज्यादा खाने की जो लत है, उसे कम करने में ये चीजें काफी मददगार साबित हो सकती हैं। बदलें खाना पकाने का तरीका कुछ सज्जियां और व्यंजन ऐसे होते हैं, जो लोगों को कम ही पसंद आते हैं। कई बार उनका स्वाद बढ़ाने के लिए हम उसमें नमक ज्यादा मात्रा में डालने लगते हैं। सलाद में ज्यादा मात्रा में नमक डालना, खाने के साथ सब्जी की तरह ढेर सारा अचार खाना आदि पहली नजर में बेहद सहज लगता है, पर धीरे-धीरे खानपान से जुड़ी ये आदतें हमारे शरीर में प्रतिदिन पांच ग्राम से ज्यादा नमक पहुंचाने लगती हैं। इसका असर सेहत पर देर-सबेर

नजर आने लगता है। ऐसे में जरूरत है खाना पकाने का तरीका बदलने की। आपके परिवार के सदस्य जिन सब्जियों का नाम सुनकर ही मुंह बनाने लगते हैं, उन्हें अब दूसरे तरीके से पकाकर देखिए। सादा तरीके से उन सब्जियों को बनाने की जगह उन्हें रोस्ट या ग्रिल करके पकाएं। इससे खाना स्वादिष्ट भी लगेगा और नमक पर भी नियंत्रण बना रहेगा।

प्रोसेस्ड फूड से बनाएं दूरी

रेडी-टू-ईट फूड और तरह-तरह के प्रोसेस्ड फूड को अपनी डाइट में कम-से-कम मात्रा में शामिल करें। इनमें नमक और चीनी दोनों की मात्रा बहुत ज्यादा होती है। इसकी जगह घर में बने ताजा खाने को तरजीह दें। सही मात्रा में नमक के सेवन का यह सबसे अच्छा तरीका है। आप अपनी डाइट में सेहतमंद खाद्य पदार्थों को जितनी ज्यादा मात्रा में शामिल करेंगी, नमक की मात्रा उसी अनुपात में संतुलित होती जाएगी।

न करें यह गलती

फल खा रहे हों या सलाद या फिर सामान्य तौर पर खाना। नमक कम लगने पर हम ऊपर से नमक डालने लगते हैं। यह सेहत के लिए ठीक नहीं है। एक तो नमक ज्यादा मात्रा में शरीर में पहुंचता है, वहीं सलाद और फल के पोषक तत्व भी कम होने लगते हैं। सीमित मात्रा में नमक का सेवन ही काफी नहीं है, उसे किस तरीके से खाया जाना चाहिए, यह तरीका जानना भी उतना ही जरूरी है।



सब्जी में ऊपर से नमक डालना हो सकता है खतरनाक

खाना बनाते वक्त नमक सबसे पहले याद आता है। आप चाहे जितने भी अच्छे और खुशबूदार मसाले डाल लें, लेकिन अगर खाने में नमक नहीं है, तो सारा खाना बेस्वाद हो जाता है। बेशक आप सब्जी में ऊपर से नमक डालने को मजबूर हो जाती हैं, लेकिन इस आदत के जरिए आप अनजाने ही कई बीमारियों को न्योता दे रही होती हैं।

नमक और आपकी सेहत

नई दिल्ली के सफदरजंग हॉस्पिटल में प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष डॉ. जुगल किशोर कहते हैं, 'नमक हमारे शरीर की इलेक्ट्रोलाइट संबंधी जरूरतों को पूरा करता है यानी इससे हमें सोडियम, पोटैशियम और कैल्शियम मिलता है। इसके अलावा इससे आयोडीन भी मिलता है। लेकिन, खाने में नमक ज्यादा हो जाए तो भी दिक्कत है और कम हो तो भी दिक्कत है। रोजाना की खुराक में नमक यानी सोडियम क्लोराइड की मात्रा पांच ग्राम से कम होनी चाहिए। अध्ययनों में यह बात सामने आई है कि नमक ज्यादा खाने की आदत के साथ रक्तचाप संबंधी समस्या भी बढ़ने लगती है। जितनी भी दिल से जुड़ी बीमारियां हैं, वे रक्तचाप के कारण ही होती हैं। इसके अलावा नमक के ज्यादा सेवन से किडनी पर भी दबाव पड़ता है। यानी शरीर के जो मुख्य अंग हैं, वे ज्यादा नमक के सेवन से प्रभावित होने लगते हैं। यही वजह है कि नमक का सेवन संतुलित मात्रा में करने की सलाह दी जाती है। एक और बात को

ध्यान में रखने की जरूरत है, रोटी, चावल, दलिया आदि खाद्य पदार्थों में प्राकृतिक तौर पर सोडियम मौजूद होता है। ऐसे में इनमें नमक न भी डाला जाए तो भी सोडियम की पूर्ति हो जाती है। उच्च रक्तचाप के मरीज को भी चार से पांच ग्राम नमक ही दिन भर में खाना चाहिए। सेहतमंद रहने के लिए किसी भी डिश में ऊपर से नमक डालकर खाने की आदत को भी बदलना जरूरी है।

मात्रा तय करें

खाना बनाते वक्त आप उसमें कितना नमक डाल रही हैं, उसकी मात्रा को देखना एक अच्छा आइडिया है। कितने लोगों के लिए सब्जी पकाई जा रही है, उसे किस तरह से पकाया जा रहा है, नमक डालते वक्त इन सब बातों को जरूर ध्यान में रखें। अगर आपके परिवार के सदस्यों को ज्यादा नमक खाने की आदत है तो धीरे-धीरे खाने में नमक की मात्रा कम करती जाएं। संभव है कि शुरुआत में उन्हें परेशानी हो, पर जल्द ही उन्हें कम नमक वाला खाना भी पसंद आने लगेगा। मसाले, टमाटर और धनिया व पुदीना आदि भी खाने में नमक की कम मात्रा को संतुलित करने में आपकी मदद करेंगे। इंडियन स्पाइल इंजीरिंग सेंटर में सीनियर डाइटिशियन डॉ. हिमांशी शर्मा के मुताबिक, 'इसमें कोई दोराय नहीं है कि आयोडीन युक्त नमक हमारी सेहत के लिए जरूरी है। गर्भवती महिलाओं के साथ-साथ होने वाले शिशु की सेहत पर भी इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इससे दिमाग चुस्त-दुरुस्त रहता है और याददाश्त मजबूत बनी रहती है। लेकिन कुछ लोग रोजाना के



सुकून चाहती हैं तो वर्क-लाइफ बैलेंस स्थापित करें

अपने प्रोफेशनल जीवन में आप आगे बढ़ना चाहती हैं, नए मुकाम हासिल करना चाहती हैं। लेकिन इस बात पर भी ध्यान देना जरूरी है कि आपकी महत्वाकांक्षाएं कहीं आपके जीवन को प्रभावित तो नहीं कर रही। प्रोफेशनल लाइफ में आगे बढ़ने के साथ जिंदगी खुशगवार बनाए रखना बेहद जरूरी है, तभी आप वर्क-लाइफ बैलेंस स्थापित कर सकती हैं। कुछ बातें इस काम में आपकी मदद करेंगी

स्मार्ट तरीके से काम करें

अगर आप अपनी नींद के घंटे घटाकर काम कर रही हैं तो कोई उसकी हिमायत नहीं करेगा। अमेरिकी अकादमी से संबद्ध मेट माइंट अपने ब्लॉग वर्कलाइफ बैलेंस में कहते हैं, 'आजकल लोग अपने दिमाग को ज्यादा काम करने और कम सोने के लिए अडटयस्त बना रहे हैं, लेकिन यह चलन सही नहीं है। आपके लिए काम के घंटे जितने महत्वपूर्ण हैं, काम के बाद का समय उतना ही मूल्यवान है।' मेटल हेल्थ फाउंडेशन का सुझाव है कि काम ज्यादा नहीं, स्मार्ट होना चाहिए। इसके लिए वरीयता स्पष्ट होनी चाहिए और हर काम के लिए समय तय होना चाहिए। गैर जरूरी चीजों में नहीं उलझना चाहिए।

काम को घर न लाएं

ऑफिस से बाहर निकलने से पहले उन कामों की सूची बना लें, जो पूरे नहीं हो पाए। लेकिन काम की लिस्ट बनाने के बाद खुद को पूरी तरह ऑफिस के काम से आजाद कर लें। यही सोचें कि आप शाम को घर पर परिवार के साथ क्या करने जा रही हैं। अगर आप मानसिक तौर पर ऑफिस में ही फंसी हुई हैं तो एक गहरी सांस लें और इस बात का अहसास करें कि आप ऑफिस से बाहर आ गई हैं। इससे आपका मन शांत और स्थिर रहेगा।

ना कहना सीखें

अगर आप काम के लिए चौबीसों घंटे उपलब्ध रहेंगी, तो स्वाभाविक रूप से आप पर काम का बोझ बढ़ जाएगा। अगर आप आदतन काम के लिए हां कह देती हैं तो कुछ अतिरिक्त काम मिलने

पर तुरंत हां कहने से पहले थोड़ा ठहर जाएं। आप कुछ देर बाद उस पर जवाब देने के लिए कह सकती हैं और इस दौरान इस बात पर विचार कर सकती हैं कि आपको हां कहना चाहिए या नहीं। अगर हां कहना चाहती हैं, तो अच्छी बात है लेकिन अगर ना कहने की इच्छा है, तो ना ही कहें और अपनी प्रतिक्रिया देने से पहले स्वयं कई बार ना बोलने का अडटयास करें।

काम के लिए 'शहीद' होने की जरूरत नहीं

कुछ महिलाओं में यह प्रवृत्ति होती है कि वे सब काम खुद ही कर लेना चाहती हैं। उन्हें इस भाव में जीना अच्छा लगता है कि वे व्यस्त हैं और उनके बारे में ज्यादा चर्चा होती है। इस बात को गंभीरता से सोचने की जरूरत है कि इससे दूसरे लोगों पर क्या प्रभाव पड़ रहा होगा। ज्यादातर लोग अत्यधिक काम यह सोचकर ले लेते हैं कि इससे दूसरों की नजर में उनका सम्मान बढ़ जाएगा। इस प्रवृत्ति के साथ आपके सिर कितना बोझ बढ़ जाएगा, अगर आप इस बात पर विचार करें तो शायद आप ऐसा व्यवहार नहीं करेंगी।

हर वक्त आपाधापी अच्छी नहीं

चाहे ऑफिस हो, जिम हो या कोई पार्टी हो, क्या आप हर जगह दौड़ते-डटागते पहुंचती हैं आपको इस बात पर निगरानी रखने की जरूरत है। आपको खुद से यह पूछने की जरूरत है कि आपकी जिंदगी कैसी चल रही है। असल में जल्दबाजी करने वाले लोग एक चीज खत्म होने पर दूसरी चीज के लिए हड़बड़ी करने लगते हैं। लेकिन ऐसी स्थिति में आप अपने दोस्तों और अपने परिवार वालों के लिए समय कैसे निकालेंगी आपाधापी में थकान होना इटी स्वाभाविक है, इसीलिए हर वक्त भागमभाग से बचें।

रिटायरमेंट के बारे में सोचें

कुछ महिलाएं काम में इस कदर डूब जाती हैं कि उन्हें उसी में आनंद मिलता है। अगर आप पूरा वक्त काम में ही दे देंगी तो किसी बुरे हालात में फंस जाने मसलन, जॉब न कर पाने की स्थिति खड़ी हो जाने, जॉब छूटने या व्यवसाय नहीं चल पाने पर आप खुद को कैसे संभालेंगी और इनसे इतर रिटायरमेंट के बाद भी आप समय किस तरह बिताएंगी, क्या आपने इस बारे में सोचा है अगर रिटायरमेंट के बाद भी आप थोड़ा-बहुत काम करें तो आपके लिए अच्छा है, लेकिन आपको अपने कुछ और शौकों को पूरा करने के बारे में भी सोचना चाहिए ताकि रिटायरमेंट के बाद भी आप सक्रिय रह सकें।



साउथ इंडस्ट्री संग काम कर चुके विनीत कुमार ने बताया क्यों फेल हो रही हैं बॉलीवुड फिल्में



बिहार से चलकर दिल्ली और फिर ऐक्टिंग के हुनर को एक पहचान देने के लिए तीन दशक पहले मुंबई आए एक्टर विनीत कुमार ने हिंदी और साउथ फिल्मों में काफी काम किया है। इन दिनों वह चर्चा में हैं अपनी नई वेब सीरीज गर्मी को लेकर। पेशा है उनसे हुई बातचीत - आपने साउथ में भी काफी काम किया है। साउथ की फिल्मों को दर्शक पसंद कर रहे हैं, वहीं बॉलीवुड की गिनी-चुनी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर टिक पा रही हैं। आपको इसकी क्या वजह नजर आती है? साउथ तो वैसे ही काम कर रहा है, जैसा वह पहले किया करता था। हम तो 2002 से उस इंडस्ट्री में काम करते आ रहे हैं। वह उस समय भी बेहतर काम कर रहे हैं। एएसएस राजामौली की आज तक एक भी फिल्म फ्लॉप नहीं हुई है। वो आदमी अपना काम कर रहा है। हिंदी की समस्या ये है कि यहां एक क्राइसिस है। क्योंकि हिंदी में लोग जमीनी स्तर पर नहीं जुड़ पाते हैं, जमीन की कहानी नहीं कह पाते हैं। इसलिए वह कोई परी कथा जैसी नजर आती है। अगर आप साउथ की फिल्मों को देखेंगे तो उनकी हर फिल्म में जो चरित्र होता है, वो जमीन का होता है, भले ही वो कर्मशियल ही क्यों ना हो। पुष्पा ही देख लीजिए, उसका लुक और बॉडी लैंग्वेज से लोग कनेक्ट करते हैं। उसकी बड़ी हुई दाढ़ी, लुंगी का पहनना, स्टाइल आदि सब से लोग जुड़ाव महसूस करते हैं। हम भी अगर अपनी जमीन समझने लगे तो हम भी ठीक परफॉर्म करेंगे। जैसे हमने गर्मी सीरीज में देखेंगे तो उसमें चरित्र हैं वो जमीन से जुड़े नजर आएंगे।

एक बेटा आईपीएस और एक ऐक्टिंग में, तो पैरेंट्स का आपके करियर चॉइस को लेकर क्या कहना था?

शुरुआती दौर में पिताजी को लगता था कि ये ऐक्टिंग वगैरह क्या बकवास है। वो कहते थे कि चार दिन नाटक बहुत कर लिया अब कोई काम करो, वरना अपना घर कैसे चलोओगे। उनकी चिंता भी वाजिब थी। थियेटर से कोई कमाई तो कर नहीं सकते थे। लेकिन जब मेरा एनएएसडी में चयन हुआ तो उनको लगा कि शायद मैंने कुछ पाया है। क्योंकि जब 1986 में एनएएसडी में आया तो उस दौर में अगर आपके आगे नेशनल शब्द लग जाता था, तो लोगों को लगता था कि आपने कुछ पाया है। नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा सुनकर लोगों को लगता था कि कुछ बड़ा आपने पाया है। तब पिताजी को थोड़ी संतुष्टि हुई कि कुछ तो बेटा अच्छा कर रहा है। उसके बाद उनका निधन हो गया। फिर जब हम 1989 में पटना आए तो पूरा राजनीतिक माहौल बना हुआ था। थियेटर वगैरह का भी उठा-पटक हो गया था। सब लोग अपने ढंग का कुछ कर रहे थे। मुझे उस समय सझम नहीं आ रहा था कि क्या करें, तब एक दोस्त ने कहा कि मुंबई में देख लो। तब हम अपना बक्सा उठाकर चल दिए मुंबई देखने के लिए। तब से अब तक हम मुंबई देख ही रहे हैं।

सीरीज गर्मी में अपने किरदार के बारे में बताएं? मूलतः ये एक राजनीति की जानकारी रखने वाला आदमी है, जिसको लोग बैरागी बाबा के नाम से जानते हैं। वह राजनीति को बहुत गंभीरता के साथ समझता है। जमीनी स्तर पर कैसे काम किया जाता है, कैसे उनका बेन वॉश कर सकते हैं, उसके बारे में वह बखूबी जानता है। इसलिए जितने भी छत्र होते हैं, वो उसके ट्रेप में होते हैं। बाहर उसका अखाड़ा है, लेकिन कमरे में राजनीति के दांव पेंच होते हैं। ऐसा कोई दौर आया जब आपको इंडस्ट्री में बने रहने के लिए किसी की मदद लेनी पड़ी हो?

हां कई लोगों ने मदद की और मैंने भी कई ऐसे लोगों की मदद की, जिन्होंने बाद में मेरी सहायता नहीं की। मेरी मदद करने वाले दो लोगों को मैं कभी नहीं भूल पाता हूँ। उसमें से एक राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता डायरेक्टर हैं, विजय अरोड़ा। दूसरे साउंड इंजीनियर राजेंद्र हेगड़े थे। इन दोनों तब उस दौर में मेरी मदद की थी जब 1986-87 में मुझे पैसों की तंगी का सामना करना पड़ा था। ये हम कभी नहीं भूल सकते। मैं जब मुंबई आया था तब 35 साल की उम्र थी, उस वक्त हम में बचपने वाली बात नहीं थी। हम जिस दौर को फेस करके आए हैं, तो आप समझ लीजिए कि हम बचपन में ही बड़े हो गए थे।

जितनी भी वेब सीरीज होती हैं और जिनमें वायलेंस नजर आता है, वो कहानी ज्यादातर यूपी बिहार से ली जाती हैं। जबकि देश के कई हिस्से और विश्वविद्यालयों में अक्सर छात्रों के बीच तनातनी और पॉलिटिकल डिस्टर्बेंस की खबरें भी आती हैं, ऐसे में क्या वजह है कि मेकर्स को छात्र, वायलेंस और पॉलिटिक्स की कहानी के लिए यूपी और बिहार का ही रुख करना पड़ता है?

इसके पीछे एक बेसिक वजह है कि वहां के लोग ज्यादा उत्तेजना में रहेंगे, जहां पर क्राइसिस है। अगर आप ध्यान दें तो आजादी के बाद से ही अगर ये दो राज्य बिहार और उत्तर प्रदेश क्राइसिस में थे। जबकि पंजाब, राजस्थान और पंजाब से अलग होकर हरियाणा बना तो वहां उस तरह के हालात नहीं थे। उसके अलावा महाराष्ट्र, हिमाचल जैसी जगहों पर दिक्कतें नहीं थीं। क्राइसिस की वजह से यूपी और बिहार में राजनीति का बाहुल्य है वो बढ़ता जाता था। इसी कारण यूपी-बिहार में बहुत ज्यादा लोग आईपीएस और आईपीएस बनते थे।

आपके भाई भी आईपीएस ऑफिसर हैं, तो कई किस्से कहानियां तो आपको उनसे भी सुनने को मिलती होंगी? हां बीते दिन उनके एक्सपोज़र का भी रिटायरमेंट हो गया है। वैसे हम दोनों ज्यादा बातचीत नहीं करते हैं। हम इस मामले में ज्यादा बात नहीं करते हैं। वो हमसे अपने विभाग की बात शेर नहीं करते हैं। हमारे और उनके बीच में उम्र का भी कोई बड़ा फासला नहीं था, हमसे दो-दो साल बड़े हैं। हम थियेटर करते रहे तो हमें इतनी फुरसत नहीं थी, और वो भी अपनी पुलिस की वही में व्यस्त रहे। अरे भई! हम बिहार से हैं, उनसे ज्यादा कहानी तो हमें पता होती है। जो कहानियां हमें पहले पता चलती थीं, उनको तो कई कहानियां हमारे बाद में जानकारी में आती होंगी। (हंसते हुए) हमें उनसे पहले पता चल जाता था कि अच्छा ये होने वाला है। आप समझ रहे होंगे कि हम क्या कहना चाहते हैं।



चोट से उबर रहे हैं अर्जुन रामपाल

पीठ में चोट लगने के बाद अभिनेता अर्जुन रामपाल ठीक होने की राह पर हैं, जिसके बाद वह विद्युत जामवाल अभिनीत फिल्म क्रेक-जीतेगा तो जिण्या का शूटिंग फिर से शुरू करेंगे। एक सूत्र ने बताया कि अर्जुन को हाल ही में जिम में वर्कआउट करने के दौरान कमर में चोट लग गई थी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, सूत्र ने बताया कि समाप्त अभिनेता होने के नाते अर्जुन रामपाल ने पूरी कोशिश की कि फिल्म की शूटिंग न रुके, लेकिन उनकी तबीयत खराब होने के कारण शूटिंग प्रभावित हुई। फिल्म की शूटिंग को बीच में रोकना पड़ गया था। मीडिया सूत्र ने कहा कि हर कोई इस फिल्म के लिए अर्जुन के उत्साह की सराहना कर रहा है। वह अपने सभी स्टंट वास्तव में अच्छी तरह से कर रहे थे। दुख की बात है कि जिम में कसरत करने के दौरान उन्हें चोट लग गई। जिसके बाद उन्हें आराम करना पड़ा क्योंकि उनकी हालत ज्यादा खराब थी। सूत्र ने कहा कि अर्जुन बहुत समर्पित हैं, घायल होने के बाद भी वह अपने स्टंट को जारी रखना चाहते थे। वे इस बात पर जोर दे रहे थे कि उनका स्टंट पूरा हो जाए। क्योंकि वह इसे करना चाहता था, वह नहीं चाहते थे कि उनका स्टंट बाँड़ी डबल करे। बता दें कि जीतेगा तो जिण्या का निर्देशन आदित्य दत्त द्वारा किया जा रहा है। फिल्म में विद्युत जामवाल लीड रोल में दिखाई देंगे, एक्टर के अलावा फिल्म में जैकलीन फर्नांडीज और अर्जुन रामपाल भी मुख्य भूमिका में दिखाई देंगे।

कोई नई फिल्म साइन नहीं कर रहे सलमान खान!

बॉलीवुड के दबंग सलमान खान की नई फिल्म किसी का भाई किसी की जान हाल ही में ईद के मौके पर रिलीज हुई है, जो बॉक्स ऑफिस पर कुछ खास कमाल नहीं कर पा रही है। 100 करोड़ रुपये के आंकड़े को छूने में फिल्म का दम निकल गया। फेस्टिव रिलीज होने के बावजूद यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर अच्छा प्रदर्शन करने में असफल रही। इस कारण अब सलमान नई फिल्मों को साइन करने के मूड में नहीं लग रहे हैं। दरअसल, सलमान खान अक्सर ईद के मौके पर अपनी फिल्म रिलीज करते हैं। इस बार भी ईद के मौके पर रिलीज हुई फिल्म उम्मीद के मुकाबले कमाई नहीं कर पाई। खबर आ रही है कि सलमान ने नई फिल्म को साइन करने से मना कर दिया है। रिपोर्ट्स के अनुसार, सलमान को छह प्रोजेक्ट्स ऑफर किए गए हैं, लेकिन वह अभी कोई भी नया प्रोजेक्ट साइन करने से परहेज कर रहे हैं। सलमान खान अपनी अगली फिल्म टाइगर 3 का इंतजार कर रहे हैं, जो नवंबर में रिलीज होगी। दिवाली के मौके पर रिलीज होने वाली इस फिल्म की प्रतिक्रिया देखने के बाद ही सलमान अपनी अगली फिल्म को लेकर फैसला करेंगे। फिलहाल, दर्शकों को वह मनीष शर्मा के निर्देशन वाली टाइगर 3 में नजर आएंगे, जिसमें कटरीना कैफ मुख्य भूमिका में अभिनेता के साथ नजर आएंगी। वहीं, शाहरुख खान का फिल्म में कैमियो रोल होगा। बता दें कि अपनी फिल्मों के साथ-साथ सलमान जान से मारने की मिल रही कई धमकियों को लेकर भी चर्चा में हैं। हाल ही में इंटरव्यू के दौरान सलमान ने अपनी सिक्वोरिटी को लेकर कहा कि सुरक्षा, असुरक्षा से बेहतर है। अब सड़क पर साइकिल चलाकर अकेले कहीं जाना भी मुमकिन नहीं है।

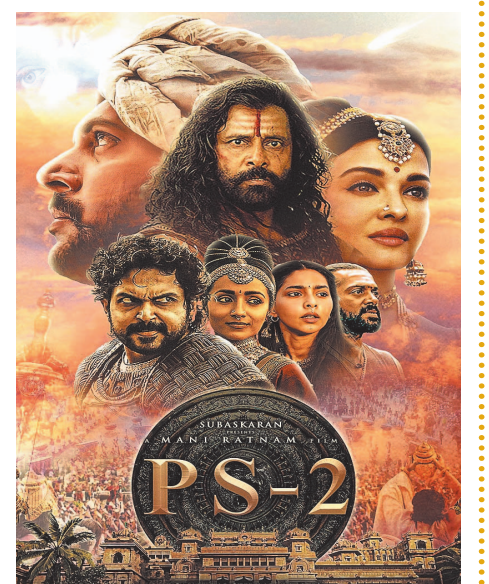
कंगना ने सेम सेक्स मैरिज को किया सपोर्ट

अपने बेबाक अंदाज के लिए जानी जाने वाली कंगना रनौत ने हाल ही में सेम सेक्स मैरिज पर बयान दिया है। मीडिया इंटरव्यू के दौरान कंगना समलैंगिक शादी को सपोर्ट करती नजर आईं और उन्होंने इसे 'प्रेम का बंधन बताया। बॉलीवुड कीन के इस बयान पर उनकी यूटी सिमरन के फिल्म निर्माता अपूर्व असरानी ने अपनी प्रतिक्रिया भी दी है। दरअसल, हाल ही में जब सेम सेक्स मैरिज पर कंगना ने नौत से उनकी राय पूछी गई तो उन्होंने कहा, जो शादी होती है वो दिल के रिश्ते होते हैं। ये सब ही जानते हैं। जब लोगों के दिल मिल गए हैं। बाकी उनकी क्या प्राथमिकताएँ हैं, हम उसके बारे में क्या कह सकते हैं? इससे पहले कंगना ने समलैंगिक विवाह के बारे में टवीट किया था, जिसमें उन्होंने कहा था, आप दुनिया में जो करते हैं उससे आपकी पहचान बनती है न कि बिस्तर पर क्या करते हैं। कंगना के बयान पर अपूर्व ने रिएक्शन देते हुए कहा कि, ज्यादातर फिल्मी सितारे समलैंगिक विवाह का खुलकर समर्थन करने से कतराते रहे हैं।



जुबली के लिए मिली प्रशंसा से खुश वामिका गब्बी

एक्ट्रेस वामिका गब्बी विक्रमादित्य मोटवाने द्वारा निर्देशित हाल ही में रिलीज हुई रट्टीमिंग सीरीज जुबली में दिग्गज एक्ट्रेस जीनत अमान द्वारा नीलोफर के किरदार की तारीफ किए जाने से काफी खुश हैं। मेजबान जाकिर खान के साथ एक विशेष बातचीत के दौरान, जीनत अमान ने कहा कि वह जुबली से नीलोफर का किरदार निभाना चाहती हैं। वामिका ने कहा, मुझे उनकी फिल्मों और गाने याद हैं। वह उस समय की सबसे आत्मविश्वासी, प्रगतिशील और बेबाक अभिनेत्रियों में से एक हैं। वह हमेशा बाकियों से अलग दिखती थीं। उनमें आत्मविश्वास है और आज तक इच्छा को फिर से परिभाषित करती हैं। उनके द्वारा तारीफ होना खुशी की बात है। उन्होंने आगे कहा, मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि उन्होंने सीरीज देखी है और उन्हें यह पसंद आया है।



पोन्नियन सेल्वन 2 ने वर्ल्डवाइड की 200 करोड़ की कमाई

ऐश्वर्या राय स्टार फिल्म पोन्नियन सेल्वन सेल्वन 2 ने रिलीज के चौथे दिन बॉक्स ऑफिस पर वर्ल्डवाइड 200 करोड़ रुपये की कमाई पूरी कर ली है। डायरेक्टर मणि रत्नम की एंटरटेनमेंट कंपनी मद्रास टॉकीस ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए फिल्म के 200 करोड़ वलब में एंटी करने की जानकारी दी। फिल्म 28 अप्रैल को बॉक्स ऑफिस पर रिलीज हुई थी। मद्रास टॉकीज के टिवटर हैंडल ने फिल्म की कमाई बताते हुए छोटी वीडियो विलफ शेयर करते हुए लिखा- पीएस 2 ने लंबी छलांग मारी है। फिल्म ने बॉक्स-ऑफिस पर वर्ल्डवाइड 200 करोड़ रुपये की कमाई पूरी कर ली है। साथ ही हैशटैग के साथ लिखा- चोला वापस आ गए हैं। पीएस 2 बॉक्स ऑफिस पर बढ़िया परफॉर्म कर रही है। इस पोस्ट पर एक फैन ने लिखा- सिर्फ 4 दिनों में 200 करोड़ वलब में शामिल हो गई पीएस-2! इसका मतलब है कि ये फिल्म 45+ दिनों में करीब 3000+ भी कर सकती है। वहीं, एक यूजर ने साउथ इंडियन एक्ट्रेस तुषा और तमिल एक्टर कार्थी को टैग करते हुए लिखा- ये कमाई आपकी है। पोन्नियन सेल्वन 2, 2022 में रिलीज हुई फिल्म पोन्नियन सेल्वन का सीकल है। फिल्म कल्क कृष्णमूर्ति की नॉवेल पोन्नियन सेल्वन पर बेस्ड है। फिल्म पोन्नियन सेल्वन कल्क कृष्णमूर्ति की नॉवेल के तीन पार्ट्स पर बेस्ड थी। जबकि, पोन्नियन सेल्वन 2 बचे हुए दो पार्ट्स पर बेस्ड है। फिल्म में ऐश्वर्या राय, विक्रम, तुषा, जयराज रवि, कार्थी, ऐश्वर्या लक्ष्मी, शोभिता धूलिपाल, प्रकाश राज, जयाम, प्रभु, आर सारतकुमार, पार्थीबन, विक्रम प्रभु जैसे एक्टर ने चोला साम्राज्य की कहानी को आगे बढ़ाया है। एक्टर कमल हसन ने फिल्म का नैरेशन किया है। ए आर रहमान ने फिल्म को म्यूजिक दिया है।

संघर्ष के दिनों को याद कर भावुक हुए शरद

पिछले दो दशकों से इंडस्ट्री में अपने अभिनय कौशल का दम दिखा रहे हैं। एक्टिंग से लेकर डबिंग तक में शरद केलकर ने अपनी मेहनत से अपना नाम बनाया है। अभिनेता ने टीवी और फिल्म इंडस्ट्री दोनों में उल्लेखनीय काम किया है। अब हाल ही में, शरद ने हाल ही में इस बात का खुलासा किया कि उन्हें करियर के शुरुआत में काफी संघर्षों का सामना करना पड़ा था और बताया कि उन्हें अपने हकलाने की वजह से भी बहुत गुस्सा आता था। शरद ने अपने हालिया इंटरव्यू में अपने संघर्ष के दिनों को याद किया और बताया कि पैसों की तंगी ने उन्हें काफी परेशान कर दिया था। इस वजह से उन्हें अपने हाथ पर 150 टांके लगवाने पड़े गए थे। शरद ने कहा, मैं जब मुंबई आया था तो उस समय हकलाना था। मैं जानता ही नहीं था कि एक्टिंग कैसे करनी है। उस वक्त बहुत तंगी थी, न पास पैसे थे और न ही रहने को घर। उस समय से मैंने सीख ली कि जब तक मुझे काम न मिल जाए मुझे मेहवत करते रहना होगा।

क्रिकेटर जितेश शर्मा पर आया उर्वशी का दिल

उर्वशी का दिल

उर्वशी रौतेला इन दिनों हर ओर छाई हैं। उनका नाम बॉलीवुड से लेकर साउथ और क्रिकेटर गॉसिप के बीच भी खूब सुनने में आ रहा है। वे भारतीय सिनेमा की सबसे कम उम्र की सुपरस्टार हैं, जो हमेशा अपनी खूबसूरती और अभिनय कौशल से लोगों को झंस करती हैं। अभिनेत्री फिलहाल क्रिकेटर जितेश शर्मा और हरप्रीत भाटिया की अभिनेत्री के बारे में किए गए कमेंट्स से सोशल मीडिया में काफी सुर्खियां बटोर रही हैं। जानिए एक्ट्रेस के बारे में क्रिकेटर्स का क्या कहना है। अपने आकर्षक लुक और बेबाक अंदाज के लिए जानी जाने वाली उर्वशी के दुनिया भर में बहुत बड़े प्रशंसक हैं। उर्वशी के बारे में जितेश शर्मा की हालिया टिप्पणी ने उन्हें एक बार फिर क्रिकेट सुर्खियों में ला दिया है। अभिनेत्री अब रवींद्र जडेजा के बाद अपने प्रशंसकों की सूची में एक और खिलाड़ी का नाम जोड़ सकती हैं। पंजाब किंग्स के स्टार क्रिकेटर, जितेश शर्मा, अर्धवें तायदे और हरप्रीत भाटिया एक स्पष्ट साक्षात्कार में एक-दूसरे को कितने अच्छे से जानते हैं, इसके अंदाजा हाल की बातचीत में लगाया जा सकता है। हाल ही एक सेगमेंट में इन खिलाड़ियों को एक दूसरे की पसंद और पसंद के बारे में सवालों के जवाब देने थे। तभी से क्रिकेटर और एक्ट्रेस दोनों के फैंस इस इंटरव्यू को लेकर चर्चा में हैं। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि हरप्रीत भाटिया को उर्वशी खूबसूरत लगती हैं और वे उन्हें अपना क़श मानते हैं। आखिरकार, वे अपने शानदार लुक के लिए जानी जाती हैं और इंडस्ट्री में कई लोगों द्वारा उनकी सुंदरता की प्रशंसा की गई है।



देश के कई राज्यों में बढ़ेगा पारा,कही बारिश के असर

नई दिल्ली। भारतीय मौसम विभाग के मुताबिक, शनिवार से देश के कई राज्यों में तापमान में इजाफा होगा। वहीं, कई राज्यों में बारिश होने की संभावना है। साइबलोन मोबा के भी आज से सक्रिय होने की संभावना है। महीने के तीसरे सप्ताह में लू चलने की भी संभावना जाहिर की गई है। यूपी में फिर गर्मी का दौर शुरू होगा।तापमान में इजाफा होगा। न्यूनतम तापमान 2३ डिग्री सेल्सियस और अधिकतम तापमान 37 डिग्री सेल्सियस पहुंच सकता है। पिछले दो सप्ताह में एक के बाद एक आने वाले पश्चिमी विक्षोभों के कारण अब तक मानसून पूर्व अवधि (एक मार्च से 31 मई तक) दिल्ली में 200 प्रतिशत से अधिक वर्षा हो चुकी है। आमतौर पर पूरी प्री-मानसून अवधि के दौरान यहां पर 48 मिमी वर्षा रिकार्ड की जाती है। आइएम्डी के मुताबिक, देश में अब तक प्री-मानसून सत्र में 28 प्रतिशत अधिक वर्षा हुई है। निजी मौसम एजेंसी के मुताबिक, पूर्वोत्तर भारत, सिक्किम,पंजाब, हरियाणा, छत्तीसगढ़, ओडिशा, केरल, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, बंगाल, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, दक्षिण आंतरिक कर्नाटक, तेलंगाना और महाराष्ट्र में कहीं-कहीं हल्की से मध्यम बारिश हो सकती है। इसके अलावा, राजस्थान में हल्की बारिश और आंध्री चल सकती है। इंडियन इंस्टीट्यूट आफ ट्रापिकल मीट्रियोलोजी पुणे के जलवायु विशेषज्ञ प्रो. रावसी मैथ्यू कौल के मुताबिक, अरब सागर और अरबल की खाड़ी में तापमान तेजी से बढ़ रहा है। हिंद महासागर में भी तापमान में इजाफा हो रहा है। यहां से चल रही गर्म हवा भारत और पाकिस्तान को सबसे ज्यादा प्रभावित करेगी।

फ्लाइट में महिला को बिच्छू ने काटा, एयरपोर्ट पहुंचने के बाद अस्पताल में भर्ती किया

नई दिल्ली। प्लेन में सांप, खटमल, चूहे यहां तक कि पक्षी भी दिखाई दिए हैं, लेकिन शायद यह पहली बार है, जब एक यात्री को बिच्छू ने काट लिया। मामला अपने देश का ही है। नागपुर- मुंबई फ्लाइट में जब प्लेन रास्ते में था, एक महिला को बिच्छू ने काट लिया। प्लेन के एयरपोर्ट पहुंचने के बाद महिला को अस्पताल ले जाया गया, जहां उनकी हालत ठीक है। कुछ देर बाद उन्हें घर जाने दिया गया और वह खतरे से बाहर है। घटना 23 अप्रैल 2023 की है। एयर इंडिया की नागपुर-मुंबई फ्लाइट आसमान में थी, जब मुंबई एयरपोर्ट को सूचना भेजी गई कि एक डॉक्टर के साथ तैयार रहे। संदेश में कहा गया था कि एक महिला यात्री को फौरन इलाज की जरूरत पड़ सकती है। इसके बाद महिला के प्लेन से बाहर निकलते ही मेडिकल टीम ने उनकी जांच शुरू कर दी। उन्हें अस्पताल ले जाया गया और कुछ देर बाद डिस्चार्ज कर दिया गया। एयर इंडिया के प्रवक्ता ने बताया है कि घटना के बाद हमारी टीम ने प्रोटोकॉल का पालन किया और एयरक्राफ्ट की गहराई से जांच की। एयर इंडिया ने बताया है कि कीड़ों को मारने वाली जब गैस छोड़ी गई तब बिच्छू पकड़ में आया। एआई ने घंटियों को हड़प परेशानी के लिए खेद बताया है। इससे पहले एक छोटी जीवित विडिया गल्फ-इंडिया फ्लाइट के कॉकपिट में पिछले साल जुलाई में दिखाई दी थी।

समुद्र से सटे ओडिशा, पश्चिम बंगाल व अन्य राज्यों में चक्रवाती तूफान का अलर्ट

–राजधानी दिल्ली में भी बारिश के आसार

नई दिल्ली (। मौसम का टैंड ग्लोबल वॉर्मिंग के कारण लगातार बदल रहा है। अप्रैल और मई के महीने में भी लोगों को गर्मी से राहत मिली हुई है। बीते कुछ वर्षों में ऐसी परिस्थिति कभी नहीं देखने को मिली है। हालांकि, मौसम विभाग का कहना है कि आज से देश के कुछ हिस्सों में तापमान में वृद्धि हो सकती है, लेकिन साथ ही कुछ इलाके चक्रवाती तूफान की चपेट में भी आने वाले हैं। समुद्र से सटे ओडिशा और पश्चिम बंगाल के अलावा इसके आसपास के राज्यों के लोग भी इससे प्रभावित होंगे। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने शुक्रवार को 7 मई से 10 मई के बीच अंडमान और निकोबार द्वीप समूह पर भारी बारिश की भविष्यवाणी की है। दक्षिण पूर्व बंगाल की खाड़ी के ऊपर एक चक्रवाती हवाओं का क्षेत्र विकसित होने की संभावना है। इसके कारण 7 मई के आसपास इसी क्षेत्र में एक कम दबाव का क्षेत्र बनने की भी संभावना है। 18 मई के आसपास बंगाल की खाड़ी के दक्षिण पूर्व में चक्रवाती तूफान आने की संभावना है। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में 7 मई को अधिकतर स्थानों पर बारिश होने की संभावना है। 8 से 10 मई के दौरान भारी बारिश का पूर्वानुमान है। इस दौरान आस-पास के क्षेत्रों में 40-50 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चलने की भी संभावना है। यह गति 70 को भी पार सकती है। 10 मई के बाद से हवा की गति 60-70 किमी प्रति घंटे की रफतार से बढ़कर 80 किमी प्रति घंटे की रफ्तार तक होने की इबल संभावना है। मौसम विभाग की भविष्यवाणी के अनुसार दिल्ली में बारिश हो सकती है, साथ ही आसमान में बादल छाप रहने की संभावना है। इसका मतलब यह हुआ कि दिल्ली वालों को अभी गर्मी से राहत मिलती रहेगी। हालांकि, यह राहत कब तक जारी रहेगी, इसके बारे में अभी कोई अलर्ट जारी नहीं किया गया है। आइएम्डी के अनुसार दिल्ली में तापमान 21 से 35 डिग्री के बीच रहने की संभावना है।

द केरल स्टोरी ने पहले दिन ही 7.5 करोड़ की कमाई की

–द केरल स्टोरी बनी 5वीं सबसे बड़ी ओपनर फिल्म

मुंबई। विवादित फिल्म द केरल स्टोरी इस शुक्रवार सिनेमाघरों में रिलीज हो गई। ट्रेलर सामने आने के बाद से शुरू हुए बवाल ने दर्शकों की रुचि फिल्म में और बढ़ा दी। द केरला स्टोरी ने पहले दिन अच्छी कमाई की और इसके साथ ही ये फिल्म इस साल की सबसे बड़ी ओपनिंग फिल्मों की लिस्ट में 5वें नंबर पर आ गई है। पिछले साल रिलीज हुई द कश्मीर फाइल्स से अदा शर्मा की इस फिल्म की तुलना हो रही है, लेकिन पहले दिन की कमाई के मामले में इसने द कश्मीर फाईल्स को भी पीछे छोड़ दिया है। इन दिनों सोशल मीडिया से लेकर राजनीति के अखाड़े तक जिस फिल्म की सबसे ज्यादा चर्चा हो रही है, वो है द केरला स्टोरी। फिल्म के कटौट के कारण ये जबरदस्त विवादों में घिर गई। इसकी रिलीज को रोकने का मामला कोर्ट तक पहुंच गया। कुछ समुदाय विशेष का कहना है कि फिल्म उनकी धार्मिक भावनाओं को आहत कर रही है और देश में इससे सम्प्रदाय तनाव बढ़ सकता है। द केरल स्टोरी ने पहले दिन 7.5 करोड़ से 8 करोड़ के बीच का बिजनेस किया है। ये आंकड़े शुरुआती हैं, इनमें फेरबदल संभव है। इसके साथ ही द केरल स्टोरी इस साल की पांचवीं बड़ी ओपनिंग करने वाली फिल्म बन गई है। इससे ऊपर चौथे नंबर पर भोला है 11 करोड़ की कमाई के साथ। द केरला स्टोरी ने पहले दिन की कमाई के मामले में अक्षय कुमार की सेल्फी और कार्तिक आर्यन की शहजादा को भी पीछे छोड़ दिया है। उल्लेखनीय है कि शनिवार और रविवार को इसके जबरदस्त कमाई करने की उम्मीद की जा रही है, क्योंकि फिल्म को लेकर लोगों में काफी एक्साइटमेंट है। शुक्रवार को अपने कर्नाटक दौरे में चुनावी रैली को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी फिल्म द केरल स्टोरी का जिक्र किया है। दूसरी तरफ इसकी तुलना विवेक अग्निहोत्री की द कश्मीर फाइल्स से की जा रही है, जिसने पहले दिन सिर्फ 3.55 करोड़ का बिजनेस किया था। निर्देशन सुदीप्तो सेन की फिल्म तीन लड़कियों की कहानी है, जो धर्म परिवर्तन जैसे साजिश का शिकार बनती हैं।

गैंगस्टर ताजपुरिया हत्या मामले में 7 पुलिसकर्मी सरपेंड

नई दिल्ली। तिहाड़ जेल में गैंगस्टर टिळू ताजपुरिया की हत्या के मामले में डीजी जेल ने एंसिस्टेंट सुपीरिंटेंडेंट समेत जेल के कुल 7 स्टाफ को सरपेंड कर दिया है। डीजी तिहाड़ ने तीन असिस्टेंट सुपरिंटेंडेंट, 4 वार्डन को सरपेंड किया गया है। इसके अलावा तीन वार्डन पर डिपार्टमेंटल इन्कारी शुरू करने के आदेश दिए हैं। डीजी तिहाड़ ने एंसिस्टेंट सुपीरेंटेंडेंट समेत जेल के कुल 7 स्टाफ को सरपेंड करने के आदेश दे दिए हैं। बता दें कि सोशल मीडिया पर तिहाड़ जेल का एक ताजा सीसीटीवी वीडियो सामने आया है, जिसमें कथित तौर पर दिखाया गया है कि गैंगस्टर टिळू ताजपुरिया पर सुरक्षाकर्मियों के सामने उभर कर भी हमला किया गया था, जब वे उसे चार कैदियों द्वारा चाकू मारने के बाद ले जा रहे थे। ताजपुरिया पर कड़ी सुरक्षा वाली जेल के भीतर गौगी गिरोह के सदस्यों ने देसी हथियारों से हमला किया था। सीसीटीवी फुटेज के अनुसार, वह तब भी जीवित था और जेल सुरक्षा कर्मियों द्वारा उसे ले जाया जा रहा था तभी आरोपियों ने दूसरी बार हमला किया। मिलान पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए जेल के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि दोषी पाए जाने वाले कर्मियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि तमिलनाडु पुलिस जेल परिसर के अंदर सुरक्षा प्रदान करती है और वह अपने कर्मियों के खिलाफ कार्रवाई करेगा।

भाजपा नेता रच रहे खड़गे व उनके परिवार के सदस्यों की हत्या की साजिश: रणदीप सुरजेवाला

–**विलप जारी करके कांग्रेस ने मोदी**

सरकार पर लगाए गंभीर आरोप

बेंगलुरु (एजेंसी)। कांग्रेस ने शनिवार को आरोप लगाया कि भारतीय जनता पार्टी द्वारा अपनी पार्टी के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और उनके परिवार को मारने के लिए भयावह साजिश रची जा रही है। बेंगलुरु में एक प्रेस कॉन्फेंस में कांग्रेस ने एक ऑडियो विलप चलाया, जिसमें दावा किया गया कि चित्तपुर के भाजपा उम्मीदवार मणिकांत रावैड़ ने खड़गे के लिए अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल किया और उन्हें और उनके परिवार को खत्म करने की बात करते हुए सुना जा सकता है। कांग्रेस नेता रणदीप सुरजेवाला ने कहा कि भाजपा नेता अब मल्लिकार्जुन खड़गे और उनके परिवार के सदस्यों की हत्या की साजिश रच रहे हैं। यह अब चित्तपुर से भाजपा के उम्मीदवार की रिकॉर्डिंग से स्पष्ट हो गया है, जो पीएम मोदी और मुख्यमंत्री बोम्मई का चेहता भी है।

रणदीप सुरजेवाला ने कहा कि मैं जानता हूँ कि प्रधानमंत्री खामोश रहेंगे और कर्नाटक पुलिस और भारत का चुनाव आयोग भी, लेकिन कर्नाटक के लोग चुप नहीं

– कर्नाटक विधानसभा चुनाव

ओपिनियम पोल बता रहे कांग्रेस का पलड़ा भारी, हालिया सर्वे ने भाजपा को जिताया

–**कर्नाटक में दोनों दलों की सीएम पद पर दावेदारी, जीडीएस भी बन सकती है किंगमेकर**

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक विधानसभा चुनाव में ज्यादातर ओपिनियम पोल कांग्रेस का पलड़ा भारी बता रहे हैं, जबकि हालिया सर्वे में भाजपा को सीटों में बढ़त मिलती दिखाई है। हालांकि कुछ लोग जीडीएस को भी दोनों के बीच रोड़ा बना रहे हैं। यहां प्रचार अभियान अपने आखिरी चरण में है। तमाम राजनीतिक दलों ने कर्नाटक में अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। यहां राज्य में मुख्य मुकाबला भाजपा और कांग्रेस के बीच माना जा रहा है। लेकिन जीडीएस को भी कम नहीं आंका जाना चाहिए और वह किंगमेकर की भूमिका में आ सकता है। इसको लेकर लगातार ओपिनियम पोल आ रहे हैं। ज्यादातर ओपिनियम पोल में कांग्रेस को बढ़त दिखाई दे रही है। तो वहीं हाल ही में हुए एक सर्वे में भारतीय जनता पार्टी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरती दिख रही है। फिलहाल कर्नाटक में चुनावी वादों का भ्रमर है। सभी दल अपने अपने स्तर पर इन लोगों को साधने की कोशिश में जुटे हुए हैं।

केंद्रीय जांच एजेंसियां यह साबित करने में जुटी हैं कि मैं चोर हूं : केजरीवाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने शुक्रवार को दावा किया कि केंद्रीय जांच एजेंसियां ‘‘ किसी भी तरह ’’ से यह साबित करने की कोशिश कर रही हैं कि वह ‘‘ चोर ’’ हैं। केजरीवाल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से कहा कि अगर उनके खिलाफ एक पैसे का भी भ्रष्टाचार मिल जाए तो वह (प्रधानमंत्री) उन्हें सार्वजनिक रूप से फांसी पर लटका दें। आबकारी नीति मामले में सीबीआई ने केजरीवाल से 16 अप्रैल को पूछताछ की थी, जिसमें दिल्ली के पूर्व उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया पहले ही जेल में हैं। एजेंसी ने केजरीवाल को गवाह के तौर पर तलब किया था।

आम आदमी पार्टी (आप) नेता केजरीवाल ने कहा, ‘‘उन्होंने सीबीआई, ईडी, आयकर विभाग और पुलिस को मेरे पीछे लगा दिया। क्यों? मकसद सिर्फ एक है कि किसी भी तरह से ये साबित करना है कि



केजरीवाल ‘चोर’ है और वह भ्रष्टाचार में लिप्त है।’ केजरीवाल यहां एक कार्यक्रम में पंजाब के लोगों को 80 ‘ आम आदमी क्लिनिक’ समर्पित करने के बाद संबोधित कर रहे थे। मोदी सरकार पर हमला करते हुए केजरीवाल ने कहा, ‘‘ मैं मोदी जी को बताना चाहता हूं। प्रधानमंत्री जी, अगर केजरीवाल भ्रष्ट है तो दुनिया में कोई ईमानदार नहीं है। मैं उनसे कहना चाहता हूँ कि जिस दिन आपको केजरीवाल के खिलाफ एक पैसे का भ्रष्टाचार मिल जाए, तो मुझे सार्वजनिक रूप से फांसी पर लटका देना।’’ उन्होंने कहा, ‘‘... लेकिन ये रोज-रोज की नौटंकी और तमाशा बंद कीजिये।

कश्मीर में जी-20 सम्मेलन को विफल करने आतंकी संगठन रच रहे षड्यंत्र

–**कश्मीर में 26/11 जैसे हमले दोहराने की सरजिश**

–**पाक में बैठे आकाओं के इशारे पर काम कर रहे आतंकी**

कनकगिरि। (एजेंसी)। श्रीनगर (इंएएस)। कश्मीर में जी-20 सम्मेलन को विफल बनाने के लिए आतंकी संगठन मुंबई के 26/11 हमले जैसा षड्यंत्र रच रहे हैं। खुफिया एजेंसी के सहयोग से जम्मू कश्मीर पुलिस ने जैश-ए-मोहम्मद के ओवरग्राउंड वर्कर को गिरफ्तार किया है। पूछताछ में उसने आतंकी संगठनों के मंसूबे सामने लाए हैं। उसने बताया कि जी-20 सम्मेलन के दौरान आतंकी वो से तीन जगहों पर एक साथ हमले की तैयारी में हैं।

आतंकियों का मकसद विदेशी मेहमानों को नुकसान पहुंचाने के अलावा होटल या सभागार में जैश-ए-मोहम्मद को ठीक सीरी तरह निशाना और बंधक बनाना है, जिस तरह 26 नवंबर 2011 को तश्कर-ए-तैयबा के आतंकियों ने मुंबई में किया था। पकड़ गया



रहेंगे और मुंहतोड़ जवाब देंगे। पवन खेड़ा भी आज यहां कांग्रेस की व्रीफिंग में मौजूद थे। कांग्रेस के एक बयान के अनुसार कन्नड़ियों के प्रति भाजपा की निर्लज्ज घृणा कर्नाटक के मिश्री के पुत्र, खड़गे को मारने के लिए एक हत्या की साजिश में प्रकट हो रही है।

कांग्रेस के बयान के अनुसार निश्चित रूप से पीएम नरेंद्र मोदी, मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई, कर्नाटक पुलिस

और चुनाव आयोग एआईसीसी अध्यक्ष और उनके परिवार को मारने की इस भयावह साजिश पर मूक रहेंगे। कांग्रेस के बयान के अनुसार इस नापाक और भयावह हत्या की साजिश का 6.5 करोड़ कन्नड़ियों द्वारा एकमात्र करारा जवाब होगा कि आगामी राज्य चुनावों में भाजपा की इस जानलेवा विचार प्रक्रिया को खत्म करना है।

17 फ़ीसदी वोट मिल सकते हैं। हालिया सर्वे के मुताबिक भी कर्नाटक में भाजपा के लिए अच्छी खबर नहीं है। 2018 की तुलना में भारतीय जनता पार्टी को 24 सीटें कम मिलेंगी। पार्टी को 74 से 86 सीटें मिलने की संभावना जताई गई है।

ओपिनियम पोल में मुख्यमंत्री के चेहरे को लेकर भी लोगों से राय मांगी गयी। ताजा सर्वे के मुताबिक सिद्धारमैया अभी भी मुख्यमंत्री पद की रेस में लोगों की पसंद बने हुए है। 42 फीसदी लोगों ने बताया कि वे मुख्यमंत्री के तौर पर देखना चाहते हैं। वहीं भाजपा के बसवराज बोम्मई को 31 फीसदी लोग मुख्यमंत्री बनाना चाहते हैं। एक अन्य सर्वे में 40 फीसदी लोगों ने सिद्धारमैया को सीएम कैंडिडेट के तौर पर पसंद किया है। वहीं, बसवराज बोम्मई को सिर्फ 42 फीसदी लोग ही सीएम के तौर पर देखना चाहते हैं। इसी तरह एचडी कुमारस्वामी को 15 फीसदी, डीके शिवकुमार को चार और बीएस येदुगुप्पा को पांच फीसदी लोग सीएम के तौर पर देखना चाहते हैं। मुख्य चुनावी मुद्दों की बात करें तो 67 फीसदी लोगों का मानना है कि महंगाई ज्यादा हुई है। गरीबी को लेकर भी लोगों ने चिंता जाहिर की है। 51फीसदी लोगों ने दावा किया है कि भाजपा के सरकार में भ्रष्टाचार बढ़ा है।

आतंकवाद विरोधी ऑपरेशन में 5 जवानों के शहीद होने के बाद राजौरी पहुंचे रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, हालात का लेंगे जायजा

जम्मू (एजेंसी)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह जम्मू पहुंचे। उपराज्यपाल मनोज सिन्हा, सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे ने उनका स्वागत किया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह राजौरी के लिए रवाना होंगे, जहां कल आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ के दौरान विस्फोट में 5 जवानों की जान चली गई थी। कल सेना के पांच जवानों के शहीद होने के बाद चल रहे अभियानों की समीक्षा करने के लिए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह शनिवार सुबह करीब 11.30 बजे जम्मू-कश्मीर के राजौरी पहुंचे। रक्षा मंत्री के साथ सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे भी है।

उत्तरी सेना के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल उषेंद्र द्विवेदी वर्तमान में ग्राउंड जीरो में मौजूद हैं क्योंकि सुरक्षा बल राजौरी के कांडी में आतंकवादियों के साथ गोलीबारी कर रहे हैं। उन्हें ग्राउंड कमांडरों द्वारा ऑपरेशन के सभी पहलुओं की जानकारी दी गई।

जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले में शुक्रवार को आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ के दौरान हुए विस्फोट में सेना के पांच जवान शहीद हो गए। पुछ आतंकी हमले में शामिल होने के संदेह में आतंकवादियों को बाहर निकालने के लिए एक संयुक्त अभियान चल रहा है।

जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में 20 अप्रैल को हुए आतंकी हमले में सेना के पांच जवान शहीद हो गए थे। रक्षा अधिकारियों ने कहा कि आतंकवादियों

देश और समाज में नफरत फैलाने वाले संगठनों पर प्रतिबंध लगाना चाहिए : अखिलेश

लखनऊ। कर्नाटक में बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाने के कांग्रेस के चुनावी घोषणा के बीच शुक्रवार को समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा कि देश और समाज में नफरत फैलाने वाले संगठनों पर प्रतिबंध लगाना चाहिए, एक समय था जब सरदार वल्लभ भाई पटेल ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) पर भी प्रतिबंध लगाया था। यहां सपा मुख्यालय से जारी एक बयान में अखिलेश यादव ने कहा है ?कि भाजपा राज में महंगाई, बेरोजगारी चरम पर है, विकास रुक गया है। उन्होंने कहा ?कि देश और समाज में नफरत फैलाने वाले संगठनों पर प्रतिबंध लगाना चाहिए, एक समय था जब सरदार वल्लभ भाई पटेल ने आरएसएस पर भी प्रतिबंध लगाया था। गौरतलब है कि कर्नाटक में 10 मई को होने वाले विधानसभा चुनावों के लिए कांग्रेस ने अपने घोषणापत्र में कहा कि वह जाति और धर्म के आधार पर नफरत फैलाने वाले व्यक्तियों और समूहों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने के लिए प्रतिबद्ध है। पार्टी ने बजरंग दल और पॉपुलर फंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) का नाम लेते हुए कहा कि उसके सता में आने पर ऐसे संगठनों पर कानून के अनुसार निर्णायक कार्रवाई सहित प्रतिबंध लगाने की कार्रवाई की जाएगी।



नीतीश कुमार ने दिया हर सीट पर साझा उम्मीदवार उतारने का फॉर्मूला

–**ममता बनर्जी ने भी दिया भाजपा के खिलाफ एकजुट होने का मंत्र**

कोलकाता (एजेंसी)।बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार लगातार भारतीय जनता पार्टी के खिलाफ विपक्षी एकता की वकालत कर रहे हैं। इसके लिए उन्होंने देश के कई विपक्षी दलों के नेताओं के साथ बैठक भी की है। हाल ही में उन्होंने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और तृलमूल कांग्रेस के मुखिया ममता बनर्जी से भी चर्चा की थी। सूत्रों का कहना है कि विपक्षी दलों के नेताओं के साथ हुई बैठक में नीतीश कुमार ने हर सीट पर साझा उम्मीदवार उतारने का फॉर्मूला दिया है। इस बीच ममता बनर्जी ने भी यही बात कही है। ममता बनर्जी ने कहा है कि विपक्षी दलों को अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव में सभी 543 सीटों

उल्लेखनीय है कि हाल के दिनों में गोवा, गुजरात, हिमाचल और कुछ अन्य राज्यों में संपन्न हुए विधानसभा चुनाव के दौरान तुणमूल कांग्रेस और आम आदमी पार्टी ने अपने उम्मीदवार उतारे थे। यहां कांग्रेस भाजपा के साथ आमने-सामने की लड़ाई लड़ रही थी। ममता बनर्जी ने शुक्रवार को शमशेरगंज में कहा कि मैं सभी विपक्षी दलों से लोकसभा चुनाव से पहले बीजेपी के खिलाफ एकजुट होने का आग्रह करूंगी। हमें बीजेपी को हराने के लिए एक-दूसरे से लड़ने की जरूरत है। उन क्षेत्रों से लड़े, जहां आपका मजबूत आधार है।



ने सेना के वाहन पर उस समय गोलीबारी की, जब वह भीमबर गली से पुंछ जिले के सांगियोट की ओर जा रहा था।

मुख्यालय उत्तरी कमान ने पिछले महीने एक बयान में कहा था आज, लगाभर 1500 घंटे में, राजौरी सेक्टर में भीमबर गली और पुंछ के बीच रच रहे सेना के एक वाहन पर अज्ञात आतंकवादियों ने क्षेत्र में भारी बारिश और कम दृश्यता का फायदा उठाते हुए गोलीबारी की।

संभावित उपयोग के कारण वाहन में आग लग गई। इस घटना में जान गंवाने वाले सेना के जवान राष्ट्रीय राइफल्स यूनिट से थे और इलाके में काउंटर टेररिस्ट ऑपरेशंस के लिए तैनात किए गए थे।

पुंछ में पिछले महीने हुए एक आतंकी हमले में रिटकी बम और स्टील की गोलियों का इस्तेमाल किया गया था जिसमें सेना के पांच जवान शहीद हो गए थे।



विशेष तौर पर काम किया जा रहा है।

सूत्रों ने बताया कि फारूक के मोबाइल फोन की जांच में पता चला है कि उसने न सिर्फ होटल का पूरा व्योरा बल्कि होटल के आसपास के कुछ खास इलाकों, रास्तों और होटल से कुछ ही दूरी पर स्थित सैन्य प्रशिक्षण की तस्वीरें सीमा पार भेजी हैं। उसने श्रीनगर के कुछ होटलों और रास्तों का भी व्योरा हैंडलरों को दिया है। वह आईएसआई के कुछ अधिकारियों और जैश के कमांडरों से कुछ संपर्क में था। बताया जाता है कि उसका पिता आईएसआई के खास मुखबिरों में गिना जाता रहा है। श्रीनगर में जी-20 शिखर सम्मेलन की

तैयारियों के तहत हो रहे विकास कार्यों की प्रगति जानने के लिए उपायुक्त मोहम्मद एजाज असद ने शुक्रवार शाम को शहर के विभिन्न भागों का दौरा किया। उन्होंने विभिन्न सौदर्यीकरण कार्यों का निरीक्षण किया। उनके साथ श्रीनगर नगर निगम के आयुक्त अतहर आमिर खान भी थे। उपायुक्त ने जीरो ब्रिज राजबाग, लाल मंडी, एलडी हॉस्पिटल रोड, गोगजीबाग, रामबाग, बजुब्र, बघाट, पॅरंपोरा, हैदरपोरा, परेन्बाग, हमहामा और एयरपोर्ट जंक्शन के सौदर्यीकरण और पुनर्विकास कार्यों का जायजा लिया।

अमेरिका में अप्रैल में 2.53 लाख लोगों को मिला रोजगार

–छंटनी की दर कम व नई भर्तियों की संख्या है अधिक

वाशिंगटन । अमेरिका के नियोजकों ने फेडरल रिजर्व की व्याज दर बढ़ोतरीयों के बीच अप्रैल महीने में कुल 2.53 लाख रोजगार मुहैया कराए। अमेरिकी श्रम विभाग ने शुक्रवार को जारी रोजगार आंकड़ों में बताया कि इस महीने में बेरोजगारी दर घटकर 3.4 प्रतिशत पर आ गई, जो पिछले 54 साल के सबसे निचले स्तर के बराबर है। श्रम विभाग ने कहा कि अप्रैल में भर्ती गतिविधियां टोस रहीं, जबकि फरवरी और मार्च के महीनों में इससे सुस्ती देखी गई थी। अप्रैल में प्रति घंटे का मेहनताना जुलाई के बाद सबसे तेजी से बढ़ा। हालांकि यह आंकड़ा मुद्रास्फीति पर नजर टिकाए बैठे फेडरल रिजर्व अधिकारियों की चिंता बढ़ा सकता है। दरअसल, वेतन बढ़ने पर मुद्रास्फीति बढ़ने की भी आशंका बढ़ जाती है। जानकारों का कहना है कि अमेरिकी केंद्रीय बैंक की तरफ से व्याज दर में वृद्धि जारी रखने के बावजूद रोजगार बाजार में मजबूती बनी हुई है। छंटनी की दर अब भी कम है जबकि नई भर्तियों की संख्या तुलनात्मक रूप से अधिक है।

ऑस्ट्रेलिया में फिर खालिस्तानियों ने मंदिरों में तोड़फोड़ की

सिडनी । ऑस्ट्रेलिया में फिर खालिस्तानियों ने मंदिरों में तोड़फोड़ की घटना को अंजाम दिया है। रोजहिल उपनगर के बापस स्वामीनारायण मंदिर में तोड़फोड़ की गई है। खालिस्तान समर्थकों ने मंदिर पर हमला कर तोड़फोड़ की। साथ ही मंदिर के गेट पर खालिस्तान का झंडा लटका दिया। लोकल मीडिया ने बताया कि जब मंदिर प्रबंधन शुक्रवार को पूजा करने के लिए पहुंचा, तब देखा कि मंदिर की दीवार टूटी हुई है। वहीं गेट पर खालिस्तान का झंडा भी लटका हुआ है। प्रतिदिन मंदिर जाने वाले हैरिस पार्क के स्थानीय निवासी ने बताया कि जब वह सुबह पूजा के लिए पहुंचे, तब देखा कि मंदिर की सामने वाली दीवार पर तोड़फोड़ की गई है। रिपोर्ट के मुताबिक सुबह 7 बजे स्थानीय पुलिस को घटना के बारे में सूचित किया गया। इसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची और मंदिर में लगे सीसीटीवी फुटेज के आधार पर जांच शुरू कर दी है। बता दें कि 24 मई को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ऑस्ट्रेलिया दौरे पर आने वाले हैं। रिपोर्ट के मुताबिक परमट्टा के लिए संसद सदस्य इंद्र्यू चार्लटन घटना की सूचना पाते ही मंदिर पहुंचे। चार्लटन ने मंदिर के अधिकारियों के साथ दीवार को फिर से रंगने में मदद की। उन्होंने कहा कि मैं इस घटना से बहुत ही हैरान और डुखी हूँ। उन्होंने लोगों से शांति बनाए रखने की अपील की है।

यूनिसेफ ने दी जानकारी : सूडान में हिंसा के कारण 10 लाख पालिया खुराक हुई नष्ट

खार्तूम । सूडान कई दिनों से हिंसा की आग में सुलग रहा है। अप्रैल से जारी हिंसा में कई लोगों की मौत और लूटपाट की घटनाएं देखी जा चुकी हैं। हिंसा के बाद फेली अराजकता ने बच्चों के लिए खंड पालियों के 10 लाख से अधिक टिके नष्ट कर दिए हैं। बच्चों के लिए संयुक्त राष्ट्र की एजेंसी यूनिसेफ ने इसकी जानकारी दी। इसके पहले खबर आई थी कि लड़ाई में शामिल एक पक्ष ने देश की उस तैब पर कब्जा किया था जिसमें कई घातक बीमारियों के सैपल रखे हुए थे। यूनिसेफ के आपातकालीन कार्यक्रम कार्यालय के उप निदेशक हेजल डे वेट ने बताया, दारफुर में 10 लाख से अधिक पोलियो वैकसीन सहित कई कोलड चेन सुविधाओं को लूट लिया गया, क्षतिग्रस्त कर नष्ट कर दिया गया है। 2022 के अंत में प्रकोप के बाद एजेंसी सूडान में पोलियो टीकाकरण अभियान चला रही थी। पोलियो एक घातक बीमारी है जो मुख्य रूप से 5 साल से कम उम्र के बच्चों को अपना शिकार बनाती है। यह विकलांगता और कई बार मृत्यु का कारण भी बन सकती है। अफ्रीका को 2020 में वाइल्ड पोलियो से मुक्त घोषित किया गया था। लेकिन मलावी, मोजाम्बिक और सूडान में पिछले साल से बाहर से आए मामले सामने आ रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के डेटाबेस से पता चलता है कि सूडान में हेल्थ केयर से जुड़ी इमारतों पर 28 हमले हुए हैं। यह संघर्ष पिछले महीने शुरू हुआ था जिसमें सूडान की सेना और पैरामिलिट्री रैपिड सपोर्ट फोर्स एक-दूसरे के खिलाफ भीषण तरीके से जंग लड़ रहे हैं। इलर्ड फूड प्रोग्राम सहित कई एजेंसियों ने सूडान संकट के दौरान लूटपाट की सूचना दी है जिसमें 13 से 14 मिलियन डॉलर की सलाइडों के नुकसान की खबर है। पिछले महीने डब्ल्यूएचओ ने एक बड़े जैविक खतरों की चेतावनी दी थी क्योंकि कुछ लड़ाकों ने नेशनल पब्लिक हेल्थ लैबोरेटरी पर कब्जा कर लिया था।

कर्ज से दबे श्रीलंका का विदेशी मुद्रा भंडार बढ़ा, मार्च में 2.69 अरब डॉलर पर पहुंचा

कोलंबो। श्रीलंका का विदेशी मुद्रा भंडार इस साल मार्च में बढ़कर 2.69 अरब डॉलर हो गया। एक साल पहले इसी महीने में विदेशी मुद्रा भंडार पांच करोड़ डॉलर था। सेंट्रल बैंक ऑफ श्रीलंका के शुक्रवार को जारी आंकड़ों से श्रीलंका की अर्थव्यवस्था में कुछ सुधार के संकेत मिल रहे हैं। श्रीलंका वित्तीय संकट में है और उस पर कुल 83.6 अरब डॉलर कर्ज है, जिसमें से विदेशी कर्ज 42.6 अरब डॉलर जबकि घरेलू कर्ज 42 अरब डॉलर है। श्रीलंका ने अप्रैल 2022 में अपनी पहली ऋण चुक की घोषणा की थी। यह 1948 में ब्रिटेन से स्वतंत्रता मिलने के बाद उसका सबसे खराब आर्थिक संकट था, जिससे विदेशी मुद्रा भंडार में कमी हो गई थी और महंगाई तथा उत्पादों की कमी को लेकर जनता सड़कों पर उतर आई थी। आंकड़ों के अनुसार श्रीलंका का विदेशी मुद्रा भंडार पिछले वर्ष मई के पांच करोड़ डॉलर से सुधरकर अब मार्च 2023 में 2.69 अरब डॉलर हो गया है।

नेपाल में हेलीकाप्टर हादसे में एक की मौत, चार घायल

काठमांडू । पूर्वी नेपाल में एक हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त होने से एक व्यक्ति की मौत हो गई जबकि पायलट समेत चार लोग घायल हो गए। एक आधिकारिक बयान में यह जानकारी दी गई। दुर्घटनाग्रस्त हेलीकॉप्टर, नेपाल की एक निजी हेलीकॉप्टर सेवा प्रदाता कंपनी का था। बयान के मुताबिक यह दुर्घटना संखुवासभा जिले में भोलेखोला नदी के पास हुई, जहां निर्माण सामग्री ले जा रहा हेलीकॉप्टर उतरने के दौरान एक पेड़ से टकरा गया। जिला प्रशासन ने कहा कि दुर्घटना में हेलीकॉप्टर पर सवार सिमरिफ सुपर हेलीकॉप्टर के कर्मचारी भाविन गुरुंग की मौत हो गई। हेलीकॉप्टर में कुल पांच लोग सवार थे। बयान में कहा गया ?कि हेलीकॉप्टर शुक्रवार को दुर्घटनाग्रस्त हुआ। हादसे में सिमरिफ एयर हेलीकॉप्टर के एक कर्मचारी की मौत हो गई, जबकि पायलट समेत चार लोग घायल हुए। काठमांडू पोस्ट अखबार की खबर के मुताबिक हेलीकॉप्टर पर सवार घायल लोगों की पहचान पायलट सुरेंद्र पौडेल, चालक दल के सदस्य शेरिग थोटे और मनोज थापा तथा नेपाल विद्युत प्राधिकरण के कर्मचारी विक्रम शंकर के तौर पर हुई है। घटनास्थल पर मौजूद वरिष्ठ अधिकारियों ने बताया कि हादसे में दो घायलों की हालत गंभीर है और दो लोगों को मामूली चोट आई है। नेपाली सेना के प्रवक्ता ब्रिगेडियर जनरल कृष्ण प्रसाद भंडारी ने कहा कि बचाव अभियान में सेना के हेलीकॉप्टर के साथ जानकों को तेनात किया गया है। हेलीकॉप्टर अरुण पनबिजली परियोजना से संबंधित निर्माण सामग्री लेकर काठमांडू से संखुवासभा गया था, जहां परियोजना स्थल स्थित है।

जापान में हिली धरती, भूकंप के बाद आए 50 झटके, एक की मौत

टोक्यो । मध्य जापान में शुक्रवार दोपहर को जोरदार भूकंप आया, जिसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई और 20 से अधिक लोग घायल हो गए। अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण ने कहा कि जापान के मुख्य द्वीप होन्शू के पश्चिमी तट पर झुशिकावा प्रांत में 6.2 तीव्रता का भूकंप आया। जापान मौसम विज्ञान एजेंसी ने भूकंप की तीव्रता 6.5 मापी और कहा कि यह लगभग 12 किलोमीटर की गहराई पर केंद्रित था। भूकंप के बाद से अब तक 50 से अधिक झटके महसूस किए गए हैं, जिनमें से एक शुक्रवार की रात को आया 5.8 तीव्रता का भूकंप भी था। झुशिकावा प्रांत में नोटो प्रायद्वीप के उत्तरी सिरे पर स्थित युजु शहर में सबसे अधिक नुकसान की सूचना है। यहां सीढ़ी से गिरकर एक व्यक्ति की मौत हो गई और प्रांत में 22 अन्य के घायल होने की सूचना है। जिनमें से दो गंभीर रूप से घायल हो गए तथा बाकी को मामूली चोट आई है। प्रांत के आपदा प्रबंधन विभाग के मुताबिक करीब 100 निवासियों ने शुक्रवार रात आश्रय केंद्रों में शरण ली।



वेटिकन में पोप फ्रांसिस बच्चों की सुरक्षा के लिए बने आयोग के सदस्यों के साथ नजर आये ।

किंग चार्ल्स III। राज्याभिषेक सिर पर सज गया ताज, किंग चार्ल्स औपचारिक रूप से बन गए ब्रिटेन के नए महाराज

लंदन (एजेंसी) । ब्रिटेन के नए राजा के औपचारिक रूप से राजतिलक समारोह में सेवा कैंटरबरी के आर्कबिशप जस्टिन वेल्बी ने पूरे कार्यक्रम का संचालन किया। किंग चार्ल्स ने इस दौरान कहा कि मैं सेवा करने नहीं बल्कि सेवा करने आया हूँ। अपने नए राजा के राजतिलक समारोह को भव्य और शानदार बनाने के लिए ब्रिटेन की सरकार करीब ढाई सौ मिलियन पाउंड से ज्यादा की रकम खर्च किया है। इस समारोह का गवाह बनने के लिए दुनिया के नामचीन लोगों को बुलाया गया। कोरोनेशन' शब्द लैटिन शब्द कोरोना से लिया गया है जिसका अर्थ 'ताज' होता है। ताजपोशी से पहले किंग चार्ल्स और उनके बड़े बेटे प्रिंस विलियम और उनकी पत्नी केट मिडल्टन बकिंघम पैलेस के नजदीक अपने करीबी लोगों और शुभचिंतकों से मुलाकात की।

सिंहासन पर विराजे सम्राट और लोगों ने झुककर प्रकट की निष्ठा

सम्राट को शाही गोला प्रस्तुत किया गया। ये धार्मिक और नैतिक अधिकारों का प्रतीक होता है। सम्राट को एक राजदंड भी दिया गया। जो उनकी शक्ति का प्रतीक होता है। फिर कैंटरबरी के आर्कबिशप ने सम्राट के सिर पर एडवर्ड का ताज रखा। इसके बाद सम्राट ताजपोशी की कुर्सी से उठकर सिंहासन पर बैठे और समकक्ष लोग उनके सामने झुककर कोनिश बजाते हुए सम्राट के प्रति अपनी निष्ठा प्रकट की।

राजतिलक

पाक सेना प्रमुख के परिवार से जुड़ी निजी जानकारी हासिल करने के मामले में आपराधिक कार्रवाई

इस्लामाबाद। (एजेंसी) । पाकिस्तानी प्राधिकारियों ने सेना प्रमुख जनरल असीम मुनिर के परिवार की निजी जानकारी हासिल करने के आरोप में छह अधिकारियों के खिलाफ आपराधिक कार्रवाई शुरू कर दी है। शनिवार को प्रकाशित एक मीडिया रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई। रिपोर्ट के मुताबिक, नागरिकों के डेटा को संग्रहित करके राष्ट्रीय पहचान पत्र और पासपोर्ट जारी करने का काम करने वाली शीर्ष राष्ट्रीय संस्था राष्ट्रीय डेटाबेस एवं पंजीकरण प्राधिकरण (नाडरा) के नए जांच के बाद अपने कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई की।

एक आधिकारिक सूत्र ने 'द डूरंट' अखबार को बताया कि सेना प्रमुख के परिवार के सदस्यों की निजी जानकारी अवैध रूप से हासिल करने के मामले

की चार अलग-अलग टीमों द्वारा जांच की गई, जिसके आधार पर नाडरा के छह कर्मचारियों को निलंबित कर दिया गया। सूत्र के अनुसार, जिन लोगों के इशारे पर सेना प्रमुख के परिवार के सदस्यों के निजी डेटा में संध लगाई गई, उनके खिलाफ भी कार्रवाई की जा रही है। उन्होंने बताया कि नाडरा के अध्यक्ष तारिक मलिक ने आरोपी कर्मचारियों के खिलाफ 23 दिसंबर 2022 और दो मार्च 2023 को जांच के आदेश दिए थे। पिछले साल दिसंबर में नाडरा और पंजीकरण प्राधिकरण (नाडरा) के नए जांच से पता चला कि बेनजरि आय सहायता कार्यक्रम से जुड़ी एक परियोजना पर काम करने वाला कनिष्ठ कार्यकारी फारूक अहमद पहला व्यक्ति था, जिसने अवैध रूप से संबंधित डेटा तक पहुंच हासिल की थी।

हम ले आए सूडान से नागरिक निकाल के, 17 उड़ानें, नौसेना के 5 जहाज और वापस लाए गए 3862 भारतीय, खत्म हुआ 'ऑपरेशन कावेरी'

नई दिल्ली (एजेंसी) । भारत ने संकटग्रस्त सूडान में फंसे अपने नागरिकों को बचाने के लिए शुरू किए गए 'ऑपरेशन कावेरी' को समाप्त कर दिया और भारतीय वायु सेना के परिवहन विमान ने 47 यात्रियों को घर लाने के लिए अपनी अंतिम उड़ान भरी। भारत ने हिंसा से प्रभावित सूडान से अपने नागरिकों को निकालने के लिए 24 अप्रैल को ऑपरेशन कावेरी शुरू किया गया था। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि 5ई को भारतीय वायुसेना के सी130 विमान के पहुंचने के साथ ऑपरेशन कावेरी के जरिए 3,862 लोगों को सूडान से बाहर निकाला गया है। उन्होंने कहा कि भारतीय वायु सेना ने 17

उड़ानें संचालित कीं और भारतीय नौसेना के जहाजों ने पोर्ट सूडान से सऊदी अरब में जेद्दा तक भारतीयों को स्थानांतरित करने के लिए पांच उड़ानें भरीं।

जयशंकर ने कहा कि सूडान की सीमा से लगे देशों के जरिए 86 भारतीयों को निकाला गया। उन्होंने कहा कि वाड़ी सैय्यदना से उड़ान जिसे बड़े जोखिम में अंजाम दिया गया था, वह भी मान्यता का पात्र है। उन्होंने सूडान से लाए गए भारतीयों की मेजबानी तथा निकासी प्रक्रिया में मदद के लिए सऊदी अरब का भी आधार व्यक्त किया। उन्होंने चाड, मिस्र, फ्रांस, दक्षिण सूडान, संयुक्त अरब अमीरात, ब्रिटेन, अमेरिका और संयुक्त राष्ट्र का भी आधार

व्यक्त किया। विदेश मंत्री ने कहा कि विदेश में सभी भारतीयों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रतिबद्धता हमारी प्रेरणा है।

बता दें कि सूडान में सेना और एक अर्द्धसैनिक समूह के बीच सला हासिल करने के लिए भीषण संघर्ष जारी है। वहीं, विदेश मंत्रालय ने मंगलवार को बताया था कि सूडान में सुरक्षा की वर्तमान स्थिति को देखते हुए भारत ने अपने दूतावास को खार्तूम से पोर्ट सूडान स्थानांतरित करने का फैसला किया है। ज्ञात हो कि पोर्ट सूडान पूर्वी सूडान में लाल सागर के पास स्थित शहर है। खार्तूम से पोर्ट सूडान की दूरी 850 किलोमीटर है।

खालिस्तान कमांडो फोर्स के चीफ परमजीत पंजवड़ की पाकिस्तान में हत्या

इस्लामाबाद । आतंकी संगठन खालिस्तान कमांडो फोर्स के चीफ परमजीत सिंह पंजवड़ की लाहौर में हत्या कर दी गई है। परमजीत सिंह पंजवार उर्फ मलिक सरदार सिंह की शनिवार सुबह करीब छह बजे जौहर टाउन स्थित सनपलावर सोसायटी स्थित उसके घर के पास हत्या कर दी गयी।

गोलीबारी में उनका गनमैन घायल हो गया। भारतीय पंजाब में झोन के माध्यम से नशीली दवाओं और हथियारों की तस्करी में शामिल परमजीत का जन्म तरन तारन के पास पंजवार गांव में हुआ था। वह 1986 में अपने चचेरे भाई लाभ सिंह द्वारा कट्टरपंथी बनने के बाद केसीएफ में शामिल हो गए, इससे पहले वह सीहल में एक केंद्रीय सहकारी बैंक में काम कर रहे थे। भारतीय सुरक्षा बलों के हाशों लाभ सिंह के खामने के बाद 1990 के दशक में पंजवार ने केसीएफ की कमान संभाली और पाकिस्तान चला गया। पाकिस्तान द्वारा शरण दिए जाने वाले सर्वाधिक वांछित आतंकवादियों की सूची में शीर्ष पर पंजवार ने सीमा पार हथियारों की तस्करी और हेरोइन की तस्करी के माध्यम से धन जुटाकर केसीएफ को जीवित रखा। पाकिस्तान सरकार द्वारा इनकार के बावजूद, पंजाब लाहौर में रहे, जबकि उनकी पत्नी और बच्चे जर्मनी चले गए।



पीएम मोदी 14 जुलाई को पेरिस में बेस्टाइल डे परेड के होंगे विशिष्ट अतिथि

पेरिस। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 14 जुलाई को पेरिस में होने वाली बेस्टाइल डे परेड में विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल होंगे। विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि भारतीय सशस्त्र बलों की एक टुकड़ी भी अपने फ्रांसीसी समकक्षों के साथ परेड में भाग लेगी। इसमें कहा गया है कि भारत-फ्रांस रणनीतिक साझेदारी की 25वीं वर्षगांठ के अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी ने इस साल बेस्टाइल डे परेड में विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल होने के फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के निमंत्रण को स्वीकार कर लिया है। मैक्रों ने एक टवीट में कहा कि प्रिय नरेंद्र, 14 जुलाई की परेड के सम्मानित अतिथि के रूप में आपका पेरिस में स्वागत करके मुझे बहुत खुशी होगी। मैक्रों के टवीट पर जवाब देते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने अंग्रेजी और फ्रेंच में टवीट किया है कि धन्यवाद मित्र इमैनुएल मैक्रों। मैं आपके और फ्रांस के लोगों के साथ बेस्टाइल डे और हमारी रणनीतिक साझेदारी का उत्सव मनाऊंगा को लेकर उत्साहित हूँ। विदेश मंत्रालय ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा से रणनीतिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, अकादमिक और आर्थिक सहयोग सहित उद्योगों की एक विस्तृत शृंखला के लिए नए और महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को निर्धारित करके भारत-फ्रांस रणनीतिक साझेदारी के अगले स्तर पर पहुंचने की उम्मीद है।

का ब्रिटेन में विरोध भी हो रहा है। लोग इस पर इतना खर्च करने से नाराज हैं। लंदन पुलिस ने छह लोगों को शाही परिवार का विरोध करने के आरोप में गिरफ्तार किया है।

किंग चार्ल्स बनेंगे 15 देशों के सम्राट

बीते साल महारानी एलिजाबेथ के निधन के बाद ही किंग चार्ल्स को राजा घोषित कर दिया गया था। लेकिन आज औपचारिक रूप से उनकी ताजपोशी हो रही है। वहीं ताजपोशी के बाद किंग चार्ल्स ब्रिटेन, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा समेत 15 देशों के राजा बन जाएंगे।

सुनक बोले- असाधारण राष्ट्रीय गौरव का क्षण

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने राज्याभिषेक को इतिहास, संस्कृति और परंपराओं की एक गौरवपूर्ण अभिव्यक्ति के रूप में वर्णित किया। सुनक ने कहा कि ये असाधारण राष्ट्रीय गौरव का क्षण है। उन्होंने कहा कि हमारे देश के आधुनिक चरित्र का एक ज्वलंत प्रदर्शन और एक पोषित अनुष्ठान जिसके माध्यम से एक नए युग का जन्म हुआ है। लेकिन हर कोई समारोह के समर्थन में नहीं है। मतदान राशनाही के लिए समर्थन को कम करने का संकेत देता है, विशेष रूप से युवा लोगों के बीच, इसके आधुनिकीकरण या यहां तक कि पूरी तरह से खत्म करने की मांग के साथ। रिपब्लिकन 'मेरे राजा नहीं' लिखी हुई तिख्तायें पकड़े हुए नजर आए।



जानकारी नहीं है।

एक चैनल पर जारी एक वीडियो में क्रेमलिन के ऊपर धुएँ जैसा उठता दिखाई दिया है। यह वीडियो संभवतः क्रेमलिन के सामने नदी पार से बनाया गया है। वीडियो के साथ दी गई जानकारी के अनुसार पास के एक अपार्टमेंट बिल्डिंग के निवासियों ने स्थानीय समयानुसार देर रात लगभग ढाई बजे धमाकों की

रूस के अंदर से किया गया क्रेमलिन पर ड्रोन अटैक

– अमेरिकी ड्रोन विशेषज्ञों का बड़ा दावा

बीजिंग (एजेंसी) । वाशिंगटन (इंएमएस) । अमेरिका स्थित ड्रोन विशेषज्ञों ने क्रेमलिन के ऊपर दुर्घटनाग्रस्त हुए ड्रोन को लेकर बड़ा दावा किया है। उनका मानना है कि उन्हें रूस के अंदर से लॉन्च किया गया हो सकता है। रूस ने बुधवार को दावा किया कि यूक्रेन ने मास्को में क्रेमलिन पर राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की हत्या के लिए ड्रोन से हमला किया था। हालांकि क्रेमलिन पर हमले में किसी भी भूमिका से इनकार करते हुए यूक्रेनी राष्ट्रपति व्लाडिमिर जेलेन्स्की के प्रस सचिव ने कहा कि उन्हें क्रेमलिन पर तथाकथित रात के हमलों के बारे में कोई

तोशाखाना मामले में अदालत 10 मई को इमरान खान के खिलाफ आरोप तय करेगी

इस्लामाबाद । इस्लामाबाद की एक अदालत ने कहा कि वह सरकारी तोहफों की बिक्की से मिली रकम को कथित तौर पर छिपाने के एक मामले में पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के खिलाफ 10 मई को आरोप तय करेगी। पाकिस्तान के चुनाव आयोग ने विदेशी गणमान्य लोगों से मिले तोहफों की बिक्की का विवरण साझा नहीं करने के कारण पिछले साल खान के खिलाफ तोशाखाना मामला दायर किया था। वर्ष 1974 में स्थापित तोशाखाना, कैबिनेट डिवीजन के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत एक विभाग है। तोशाखाना में पाकिस्तानी शासकों, सांसदों, नौकरशाहों और अधिकारियों को अन्य देशों की सरकारों, राज्यों के प्रमुखों और विदेशी गणमान्य व्यक्तियों से मिले कीमती उपहारों को संग्रहीत किया जाता है। खान (70) ने मामले की विचारणीयता को चुनौती दी है, लेकिन सत्र अदालत के अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश हुमायूं दिलावर ने वकीलों की दलीलें सुनने के बाद इन याचिकाओं को खारिज कर दिया।



देश प्रदेश की जनता को ही अपना परिवार मानते है मोदी-मनोहर : कृष्णपाल गुर्जर

फरीदाबाद की आवाज/सतेन्द्र राजपूत फरीदाबाद। हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल का जन्मदिवस मुख्यमंत्री के पूर्व राजनैतिक सलाहकार एवं वरिष्ठ भाजपा नेता अजय गौड़ के संयोजन में सेक्टर-16 स्थित पंजाबी धर्मशाला में सेवा दिवस के रूप में मनाया गया। इस दौरान गरीब, विधवा व जरूरतमंद 500 महिलाओं को सिलाई मशीनें वितरित की गईं। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री के रूप में केंद्रीय राज्यमंत्री कृष्णपाल गुर्जर ने शिरकत की, जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में आरएसएस के प्रांतीय अध्यक्ष गंगाशंकर मिश्र, विधायक नरेंद्र गुप्ता, जिलाध्यक्ष गोपाल शर्मा, नगर निगम के निवर्तमान वरिष्ठ उपमहापौर देवेन्द्र चौधरी मौजूद रहे, कार्यक्रम का मंच संस्थालेन भाजपा के जिला उपाध्यक्ष पंकज रामपाल द्वारा किया गया। इस मौके पर केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गुर्जर ने मुख्यमंत्री मनोहर लाल को जन्मदिवस की बधाई देते हुए पार्टी और अपनी ओर से उनके उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु की कामना की। श्री गुर्जर ने कहा कि नरेंद्र मोदी जब प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने स्पष्ट कहा था कि उनकी सरकार गरीबों को समर्पित सरकार है, देश के संसाधनों पर पहला हक गरीबों का है, जबकि पहले जो प्रधानमंत्री हुए उनके शासनकाल में देश के संसाधनों पर एक समुदाय का हक रहा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश की 140 करोड़ जनता व मुख्यमंत्री मनोहर लाल हरियाणा की बड़ी



करोड़ की जनता को अपना परिवार मानते है, यही कारण है कि मोदी-मनोहर सरकार के हर निर्णय में गरीब हित नजर आता है। मोदी-मनोहर के लिए देश पहले और सभी चीजें बाद में है, जबकि विपक्षी दलों के लिए पहले परिवार उसके बाद में देश। उन्होंने कहा कि मोदी- मनोहर सरकारों की सोच अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति को सशक्त करके स्वावलंबी बनाना और समाज की मुख्यधारा में लाना है, इसी सोच के चलते दोनों सरकारों काम कर रही हैं। उन्होंने कहा कि पूर्व की सरकारों में जहां गांव-कालोनियों में बिजली की किल्लत रहती थी वही मुख्यमंत्री मनोहर लाल के कुशल नेतृत्व में हरियाणा के 6700 गांव में से 5900 गांवों में 24 घंटे बिजली उपलब्ध कराई जा रही है। उन्होंने

कहा कि मोदी-मनोहर सरकार किसान, गरीब, जरूरतमंद, दलित सहित छोटीस बिरादरियों के हितों में योजनाएं क्रियान्वित कर रही है, जिसका लाभ सभी को मिल रहा है। इस मौके पर आरएसएस के प्रांतीय अध्यक्ष गंगाशंकर मिश्र, विधायक नरेंद्र गुप्ता व जिलाध्यक्ष गोपाल शर्मा ने भी अपने-अपने वक्तव्यों में मोदी-मनोहर सरकार की नीतियों का बखान करते हुए मुख्यमंत्री मनोहर लाल को जन्मदिवस की बधाई दी। इस मौके पर कार्यक्रम के आयोजक एवं वरिष्ठ भाजपा नेता अजय गौड़ ने कार्यक्रम में आए हुए सभी अतिथियों, भाजपा कार्यकर्ताओं एवं मातृशक्ति का आभार जताते हुए कहा कि आज मुख्यमंत्री मनोहर लाल जी का जन्मदिवस है, परंपरा रही है

जन्मदिवस पर हम परिवार में केक काटते है दावत देते है, लेकिन मुख्यमंत्री मनोहर लाल जब से समाज सेवा के लिए उतरे है, उन्होंने लक्ष्य रखा कि अंतिम छोर के व्यक्ति का उत्थान कैसे हो, इसी को लेकर वह संघ में आए और अनेकों वर्षों तक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में काम किया और यह हमारे के लिए गौरव की बात है कि फरीदाबाद से ही उन्होंने अपने सामाजिक जीवन की शुरुआत की। और मुख्यमंत्री मनोहर लाल पिछले आठ सालों से वह सेवा दिवस के रूप में हरियाणा एक-हरियाणवी एक के नारे के तहत लोगों की सेवा कर रहे है। 18 घण्टे काम करने के बाद भी अंतिम व्यक्ति के बारे में सोचने और हर समस्या के समाधान ढूँढने का संकल्प मुख्यमंत्री जी रखते है, उन्हें भी मुख्यमंत्री जी के साथ काम करने का अवसर मिला। अजय गौड़ ने कहा कि पहले मुख्यमंत्री अपने क्षेत्र रोहतक, सिरसा व भिवानी तक विकास सीमित रखते थे, लेकिन मनोहर लाल ने प्रदेश के हर जिले में विकास की अलख जगाई और सत्तापक्ष के साथ-साथ विपक्षी विधायकों को भी विकास के लिए प्रेरित है। श्री गौड़ ने बताया कि आज सेवा दिवस कार्यक्रम में परिवार पहचान पत्र में एक लाख 80 हजार से कम आय वाली विधवा, गरीब व जरूरतमंद 500 महिलाओं को सिलाई मशीनें प्रथम चरण में वितरित की गई है, आगे भी दूसरे चरण में अन्य महिलाओं को भी सिलाई मशीनें वितरित की जाएगी।

पूर्व मंत्री विपुल गोयल ने डिजिटल तरीके से मनाया मुख्यमंत्री मनोहर लाल का 70वां जन्मदिवस

फरीदाबाद की आवाज

फरीदाबाद। भाजपा के सारथी और हरियाणा के सिरमौर कहे जाने वाले मुख्यमंत्री मनोहर लाल के 70वें जन्मदिन को उनके कार्यकर्ताओं द्वारा आज बड़ी धूमधाम से प्रदेश में कई जगहों पर मनाया गया। मुख्यमंत्री मनोहर लाल के जन्मदिन के मौके पर शुक्रवार को संत कबीर कुटीर में बधाई देने वालों का तांता लगा रहा। प्रदेश के विभिन्न हिस्सों से आए साधु-संतों ने भी मुख्यमंत्री को इस अवसर पर बधाई और आशीर्वाद दिया। मुख्यमंत्री ने अपने निवास स्थान संत कबीर कुटीर में सुबह हवन यज्ञ किया और प्रदेश की सुख समृद्धि की प्रार्थना की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि प्रदेश की जनता ही उनका परिवार है और उनका जीवन समस्त हरियाणा वासियों को समर्पित है। मुख्यमंत्री को उनके जन्मदिन पर योग गुरु स्वामी रामदेव, गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद, महामंडलेश्वर स्वामी धर्मदेव, अलवर से सांसद बाबा बालकनाथ सहित देश प्रदेश से आए साधु संतों ने आशीर्वाद दिया। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर युवाओं को तोहफा देते हुए कौशल रोजगार निगम के माध्यम से एक क्लिक से 896 युवाओं को नौकरी के ऑफर लेटर भेजे। साथ ही उन्होंने अनाथ बच्चों के कल्याणार्थ हरियाणा बाल कल्याण परिषद को 2 करोड़ रुपए की राशि प्रदान करने की घोषणा की। इसी कड़ी में आज फरीदाबाद के एनआईटी एक नंबर में ऑफफेज होम में छोटे-छोटे बच्चों ने मिलकर मुख्यमंत्री मनोहर लाल का 70वां जन्मदिन धूम धाम से मनाया। पूर्व उद्योग मंत्री विपुल गोयल आज मुख्यमंत्री मनोहर लाल को बधाई देने उनके चंडीगढ़ आवास पर पहुंचे और हवन में भाग लिया तथा वीडियो कॉलिंग के माध्यम से पूर्व मंत्री ने सीएम से मिलकर बच्चों से अपने मुख्यमंत्री को रूबरू करवाया। इस मौके पर छोटे-छोटे बच्चों ने तालियां बजाकर मुख्यमंत्री को जन्मदिवस की बधाई दी और दीर्घायु की कामना की और

इसके बाद मुख्यमंत्री के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सभी बच्चों के लिए पूर्व मंत्री द्वारा लजीज व्यंजनों का प्रबन्ध किया हुआ था जिसका सब बच्चों ने आनंद लिया। इस मौके



पर मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने सभी बच्चों को संदेश देते हुए कहा कि जन्मदिवस हमें केक काटकर नहीं बल्कि सभी को मिल-बांटकर मनाना चाहिए। पूर्व उद्योग मंत्री विपुल गोयल ने प्रदेश के मुखिया को इस मौके पर मिलकर बधाई देते हुए उनके उत्तम स्वास्थ्य की कामना की। इस मौके पर पूर्व चैयरमैन मारकेट कमेटी पंडित मुकेश शास्त्री, राज कुमार राज वरिष्ठ नेता, अजय सोनी उर्फ टीटू, मनीष रायव एडवोकेट, सीमा भारद्वाज, सुन्दर सिंह मिलहराड कॉलोनी से हॉस्टल का स्टॉफ व अन्य लोग मौजूद थे।

मिशन जागृति के जटायु'..जीवन रक्षक यान से मिलेगी जरूरतमंदों को मदद-कृष्ण पाल गुर्जर

फरीदाबाद की आवाज

फरीदाबाद। मिशन जागृति ने अपनी सेवा के कामों में एक कदम और आगे बढ़ाया मिशन जागृति ने आज एम्बुलेंस सर्विस शुरू करी जिसका उद्घाटन माननीय केंद्रीय राज्य मंत्री श्री कृष्ण पाल गुर्जर ने हरी झंडी दिखा कर किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि नर सेवा ही नारायण सेवा होती है जिसको मिशन जागृति ने पिछले 15 सालों से चरित्रार्थ करके दिखाया है। इंसान के दो काम सबसे ज्यादा जरूरी होते है पहला शिक्षा दूसरा चिकित्सा और इन दोनों क्षेत्रों में मिशन जागृति बहुत अच्छा काम कर रही है मिशन जागृति की पूरी टीम को मेरी शुभकामनाएं। इस अवसर पर प्रोजेक्ट जटायु के हेड दिनेश रायव ने बताया कि यह जटायु जीवन रक्षक यान नो प्रॉफिट नो लॉस पर चलेगा और जरूरतमंद इंसान की जरूर को पूरा करेगा। मिशन जागृति के अध्यक्ष विवेक गौतम ने बताया कि ये जटायु जीवन रक्षक यान लागू को सीमित दरों पर लोगों की मदद करेगा। इस मौके पर महिला जिला अध्यक्ष लता सिंगला ने कहा कि संगठन के द्वारा लगातार सेवा के कार्य जारी है और आगे भी सबकी मदद से करते रहेंगे। इस मौके पर लता सिंगला, प्रभा सोलंकी भावना



चौधरी संतोष अरोड़ा गीता शर्मा चंद्रभान अशोक भट्टेजा, गुरनाम सिंह विपिन शर्मा विपिन भारद्वाज राजेंद्र नगर मुकेश सिंह शिवानंद, दिगंबर सिंह, राजेश भूटिया और साहित्य नंबरदार मौजूद रहे

विधायक नरेंद्र गुप्ता ने विकास दिवस के रूप में मनाया मुख्यमंत्री का जन्मदिन

फरीदाबाद। फरीदाबाद विधानसभा क्षेत्र के भाजपा विधायक नरेंद्र गुप्ता ने शुक्रवार अपने सैक्टर-11 स्थित कार्यालय पर मुख्यमंत्री मनोहरलाल का जन्मदिन कार्यक्रमों में आमजन के साथ विकास दिवस के रूप में मनाया। इस मौके पर विधायक नरेंद्र गुप्ता ने कार्यक्रमों से मुख्यमंत्री के जन्मदिन का केक कटवाया तथा मुख्यमंत्री को जन्मदिन की बधाई देते हुए उनकी लंबी आयु की कामना की। इस दौरान पीएम नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री मनोहरलाल के कटआउट आकर्षण का केंद्र रहे। इस मौके पर विधायक नरेंद्र गुप्ता ने कहा कि मुख्यमंत्री मनोहरलाल को विकास पुरुष कहा जाता है और उन्हीं के मार्गदर्शन में प्रेरणा लेकर उन्होंने आज का दिन विकास दिवस के रूप में मनाया है तथा संकल्प लिया है कि फरीदाबाद के लोगों का हैप्पी इंडेक्स बढ़ाने के साथ-साथ विकास की गति को और तेज करने का वे प्रयास करेंगे। उन्होंने कहा कि आज हरियाणा में चाहे लिंगानुपात में बेटियों की संख्या बढ़ने की बात हो या फिर विकास के नए आयाम स्थापित करने की, मुख्यमंत्री मनोहरलाल के नेतृत्व में हरियाणा नित नए सफलता के आयाम स्थापित कर रहा है तथा देश में ही नहीं पूरे विश्व में हरियाणा की अलग पहचान है। इस मौके पर विशेष रूप से मुख्यमंत्री मनोहरलाल को जन्मदिन की बधाई देने का अभियान भी चलाया गया। इस मौके पर भाजपा मंडलाध्यक्ष कुलदीप साहनी, सचिन शर्मा, नीरज मित्तल, अजीत नंबरदार, कमल सौरत, विवेक खटाना, संदीप बंसल, अमित आर्य, वजीर डगार, सुनील कुमार, मनोज मंगला सहित अनेक भाजपा नेता, कार्यकर्ता आदि।

अपने भक्त को अकेला नहीं छोड़ते भगवान - स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य

फरीदाबाद की आवाज

फरीदाबाद। सेक्टर 44 स्थित श्री लक्ष्मीनारायण दिव्यधाम में आयोजित श्री नृसिंह जयंती पर विशाल शोभायात्रा निकाली गई जिसमें ढोल गाजे बाजे के साथ भक्तजन समिलित हुए। इससे पूर्व यहां जगदगुरु स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य जी महाराज ने भगवान नृसिंह का अभिषेक किया और भक्तों को प्रवचन कहे एवं प्रसाद प्रदान किया। श्री नृसिंह जयंती के अवसर पर सुबह से ही यहां भक्तों की बड़ी संख्या जुटनी शुरू हो गई थी। जहां अनंत श्री विभूषित इंद्रप्रस्थ एवं हरियाणा पीठाधीश्वर श्रीमद् जगदगुरु रामानुजाचार्य स्वामी पुरुषोत्तमाचार्य महाराज ने आराधन, पुण्याहवान व अन्य रीतियों से भगवान का अभिषेक किया। महाराज ने बताया कि नृसिंह रूप में भगवान ने धर्म की रक्षा के लिए अवतार लिया। उन्होंने अपने भक्त प्रह्लाद की रक्षा के लिए स्वयं प्रकट होकर यह बता

दिया कि वह नाम का सम्मान करते हैं। इस नाम का कलियुग में बड़ा महत्व है। इसलिए परमात्मा के नाम जप से मनुष्य का कल्याण सरलता से हो सकता है। उन्होंने कहा कि भगवान अपने भक्त को कभी भी अकेला नहीं छोड़ते हैं। उन्होंने कहा कि एक भक्त के जीवन की गारंटी है कि भगवान उस जीव को इस जीवन में भी और उसके बाद के जीवन में भी नहीं भटकने देते। यहां देर शाम भगवान श्री नृसिंह की उत्सव विग्रह के साथ निकाली गई शोभायात्रा में सैकड़ों भक्तों ने भाग लिया। जिसमें गाजे बाजे ढोल आदि के साथ भक्तों ने मधुर भजन की धुनों पर जमकर नृत्य करते हुए भगवान की पालकी को उठाने का अवसर प्राप्त किया। भगवान की पालकी को कंधा देने के लिए उनमें एक होड़ सी देखी गई। इस मौके पर अनेक संत, भक्त व संस्कृत शिक्षार्थियों ने भागीदारी की। सभी ने भोजन प्रसाद प्राप्त किया।

STAR PRINT O PACK
A COMPLETE UNIT OF PRINTING & PACKING

Deals in
Gifting Boxes, Wedding boxes
(all type of boxes)
& Printing

contact : +91 991-034-0074 / Email : starprintapack@gmail.com

Swastika Creation
COMPLETE PRINTING SOLUTION

All Type of Offset Printing, Label Printing, Die Cutting, Lamintion, Gumming, Calender, Dairy, Gift Items Etc.

19, DSIDC Shed Scheme 3, Okhla Industrial Area Phase-II, New Delhi- 110020
Mob: 9810635211, 9990635211, 9811635211
Web: www.swastikacreation.com
Email: dinesh@swastikacreation.com

J & J Buildcon
Construction, Collaboration, Sale Purchase, Renting In All Types Of Property

Office: C-57, Ground Floor, Okhla Phase-I, New Delhi - 110020
Mobile: +91 9899280786 (AMIT KUMAR) Tel.: 011-49066880
E-mail: jandjbuildcon@gmail.com www.J&Jbuildcon.com

RITUCHAWLA MAKEOVERS

OUR SERVICES

- BRIDAL MAKEUP
- PARTY MAKEUP
- MEHANDI LOOK
- HALDI LOOK
- PORTFOLIO SHOOT

DM FOR BOOKINGS & MORE DETAILS

rituchawla7 9810721900

The Pet World
A Complete Pet Shop
(A Unit of Rajeev Kiryana Store)

SCF-141, Basement, Near Bikaner Sweets, Sector-17, Faridabad
Mob.: 9873808919, 9811132965 Email : rajeevbombi@gmail.com

Deals in :
Pet Supplement,
Pet Food
Pet Accessories,
Birds Food

We also deals in :
Sale Purchase
Pups, Kitans
& Fancy Birds

Free Home Delivery*

*Conditions apply

SOFTSYNTH
BUILD YOUR DREAMS

6 WEEKS/MONTHS
INTERNSHIP WITH
LIVE PROJECTS

- WEB DEVELOPMENT
- WEB DESIGNING
- CORE JAVA & ADVANCE JAVA
- FULL STACK DEVELOPMENT
- ANDROID APP DEVELOPMENT

Apply Now

FOR MORE INFO:

CONTACT: 9821121575/ 0129-4154215
VISIT: https://softsynthsoftware.com/
EMAIL: info@softsynthsoftware.com
ADDRESS: SOFTSYNTH SOFTWARE SOLUTIONS
SCF-165, First Floor, Sector-9, Faridabad